गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रस्तुत... 28 अक्टूबर से 3 नवम्बर 2018

गुरुत्व ज्योतिष

साप्ताहिक ई-पत्रिका

अहोई अष्टमी

रमा एकादशी व्रत कथा

मानसिक अशांति निवारण उपाय

नक्षत्रों में धारण करें नये कपडे

अंग फड़कने से शुकन अपशुकन

मनोवांछित फलो कि प्राप्ति

रत्नों का अद्भुत रहस्य (मोती)

प्रकृति की अलौकिक देन रुद्राक्ष

स्वप्न फल विचार

अंक ज्योतिष का रहस्य मूलांक



NON PROFIT PUBLICATION

Font Help >> http://gurutvajyotish.blogspot.com

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष
साप्ताहिक ई-पत्रिका
28 अक्टूबर से
3 नवम्बर 2018

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418,
91+9238328785,

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvakaryalay.in

http://gk.yolasite.com/

www.shrigems.com

www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

पत्रिका प्रस्तुति

चिंतन जोशी,

गुरुत्व कार्यालय

फोटो ग्राफिक्स

चिंतन जोशी,

गुरुत्व कार्यालय

गुरुत्व ज्योतिष साप्ताहिक ई-पत्रिका में लेखन हेतु फ्रीलांस (स्वतंत्र) लेखकों का स्वागत हैं...✍

गुरुत्व ज्योतिष साप्ताहिक ई-पत्रिका में आपके द्वारा लिखे गये मंत्र, यंत्र, तंत्र, ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, फेंगशुई, टैरों, रेकी एवं अन्य आध्यात्मिक ज्ञान वर्धक लेख को प्रकाशित करने हेतु भेज सकते हैं।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

BHUBNESWAR-751018, (ODISHA) INDIA

Call Us: 91 + 9338213418,
91 + 9238328785

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in,
gurutva.karyalay@gmail.com

प्रिय आत्मिय,

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

संपादकीय

हिंदू पंचांग के अनुसार इस सप्ताह प्रमुख व्रत त्यौहार में अहोई अष्टमी व्रत कार्तिक कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन किया जाता है। विद्वनों के मतानुसार पुत्रवती महिलाओं के लिए यह व्रत अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अहोई अष्टमी व्रत में स्त्रीयां अपनी संतान की लम्बी आयु और सुखमय जीवन की कामना से यह व्रत में दिन भर उपवास रखती हैं और सायंकाल तारों का दय के समय होई का पूजन किया जाता है। अहोईअष्टमी के व्रत में चन्द्रोदय-व्यापिनी कार्तिक कृष्ण अष्टमी को चुना जाता है। 31 अक्टूबर 2018 रात्रिव्यापिनी अष्टमी होने से शास्त्रीय निर्देश के अनुसार अहोई अष्टमी का व्रत इसी दिन करना चाहिए।

अन्य प्रमुख व्रत हैं कार्तिक कृष्ण पक्ष एकादशी के विषय में अर्जुन ने भगवान् श्री कृष्ण से कहा हे भगवन् ! कृप्या मुझे कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की एकादशी की कथा सुनाइए। इस एकादशी का नाम क्या है तथा इसमें किस देवता का पूजन किया जाता है । इस एकादशी का व्रत करने से क्या फल मिलता है ? कृपा करके यह सब विस्तारपूर्वक बताएं। अर्जुन की बात सुनकर भगवान् श्रीकृष्ण एक पौराणिक कथा का विस्तृत वर्णन करते हे और कहते हैं कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम रमा हे । इसके व्रत से व्यक्ति के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं ।

इस अंक में पाठको के ज्ञान वर्धन हेतु वास्तु के अनुसार मानसिक अशांति निवारण के सरल उपायों को देने का प्रयास किया हैं, क्योकिं आज की भागदौड़ से भरी जिंदगी मैं हर व्यक्ति अपने काम में व्यस्त हैं। जिस कारण से अधिकतर लोग मानसिक शांति से ग्रस्त होते है। व्यस्ता एवं भौतिकता से भरी दिनचार्या में व्यक्ति के पास अपने स्वयं के लिए भी वक्त ही नहीं होता है। यदि आप इस तरह की परेशानी से ग्रस्त हैं और आप मानसिक कष्ट तनाव इत्यादी से मुक्ति चाहते हैं, तो इस वास्तु सुझावो को जीवन में अवश्य आजमाकर देख ले आपको निश्चित लाभ प्राप्त होगा।

इसके अलावा पाठको के मार्गदर्शन हेतु ज्योतिष के अनुशार कुछ विशेष नक्षत्रो में नए कपड़े पहने से इसका शुभ फल प्राप्त होता हैं, एवं कुछ नक्षत्रो में नए कपड़े पहनने से स्वास्थ्य, आर्थिक परेशानि इत्यादि समस्याए उत्पन्न होती हैं। नये कपड़े धारण करने हेतु अश्विनी, रोहिणी, पुष्य, चित्रा, पूनर्वसु, उत्तर फाल्गुनि, हस्त, विशाखा, अनुराधा, उत्तरषाढ, धनिष्ठा, उत्तर भाद्रपद, रेवति, शुभ माने गये हैं। सभी नक्षत्रों में नये कपड़े धारण कने का प्रभाव का संकलन करने का प्रयास किया हैं।

इस साप्ताहिक ई-पत्रिका में संबंधित जानकारीयों के विषय में साधक एवं विद्वान पाठको से अनुरोध हैं, यदि दर्शाये गए मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना एवं उपायों या अन्य जानकारी के लाभ, प्रभाव इत्यादी के संकलन, प्रमाण पढ़ने, संपादन में, डिजाईन में, टाईपींग में, प्रिंटिंग में, प्रकाशन में कोई त्रुटि रह गई हो, तो उसे स्वयं सुधार लें या किसी योग्य ज्योतिषी, गुरु या विद्वान से सलाह विमर्श कर ले । क्योकि विद्वान ज्योतिषी, गुरुजनो एवं साधको के निजी अनुभव विभिन्न मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना, उपाय के प्रभावों का वर्णन करने में भेद होने पर कामना सिद्धि हेतु कि जाने वाली वाली पूजन विधि एवं उसके प्रभावों में भिन्नता संभव हैं।

आपका जीवन सुखमय, मंगलमय हो परमात्मा की कृपा
आपके परिवार पर बनी रहे। परमात्मा से यही प्राथना हैं...

चिंतन जोशी

***** साप्ताहिक ई-पत्रिका से संबंधित सूचना *****

- ई-पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ई-पत्रिका में वर्णित लेखों को नास्तिक/अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ई-पत्रिका के लेख आध्यात्म से संबंधित होने के कारण भारतिय धर्म शास्त्रों से प्रेरित होकर प्रस्तुत किया गया हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित जानकारीकी प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं और ना हीं प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ई-पत्रिका से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ई-पत्रिका से संबंधित किसी भी प्रकार की आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ई-पत्रिका से संबंधित लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर दिए गये हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले धार्मिक, एवं मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं। यह जिन्मेदारी मंत्र- यंत्र या अन्य उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी।
- क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ई-पत्रिका से संबंधित जानकारी को माननने से प्राप्त होने वाले लाभ, लाभ की हानी या हानी की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी जानकारी एवं मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या कवच, मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- ई-पत्रिका में गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रकाशित सभी उत्पादों को केवल पाठको की जानकारी हेतु दिया गया हैं, कार्यालय किसी भी पाठक को इन उत्पादों का क्रय करने हेतु किसी भी प्रकार से बाध्य नहीं करता हैं। पाठक इन उत्पादों को कहीं से भी क्रय करने हेतु पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

अहोई अष्टमी (31 अक्टूबर 2018)

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

अहोई अष्टमी व्रत कार्तिक कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन किया जाता है। विद्वनों के मतानुसार पुत्रवती महिलाओं के लिए यह व्रत अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अहोई अष्टमी व्रत में स्त्रीयां अपनी संतान की लम्बी आयु और सुखमय जीवन की कामना से यह व्रत में दिन भर उपवास रखती हैं और सायंकाल तारों का दय के समय होई का पूजन किया जाता है। तारों को करवा से अर्घ्य देने का विधान है। पूजन हेतु होई को गेरु आदि के द्वारा दीवार पर बनाई जाती है अथवा किसी मोटे वस्त्र पर होई काढकर पूजा के समय उसे दीवार पर टांग दिया जाता है।

होई के चित्रांकन में ज्यादातर आठ कोष्ठक की एक पुतली बनाई जाती है। उसी के पास साही तथा उसके बच्चों की आकृतियां बना दी जाती हैं।

विभिन्न अंचलों में अहोईमाता का स्वरूप वहां की स्थानीय परंपरा के अनुसार अंतर हो जाता है। धनाढ्य घर की स्त्रीयां चांदी की होई बनवा कर उसका पूजन करती हैं। जमीन पर गोबर से लीपकर कलश की स्थापना होती है। अहोईमाता की पूजन करके उन्हें दूध-चावल का भोग लगाया जाता है। तत्पश्चात एक पाटे पर जल से भरा लोटा रखकर अहोईअष्टमी की कथा सुनी जाती है। पौराणिक ग्रंथों में अहोईअष्टमी की कथ का उल्लेख मिलता हैं।

कथा : प्राचीन काल में एक साहुकार था, जिसकी एक बेटी, सात बेटे और सात बहुएं थी। साहुकार बेटी दीपावली में ससुराल से मायके आई थी। दीपावली में घर को लीपने के लिए घर की सातों बहुएं मिट्टी लाने जंगल में गई तो साहुकार बेटी भी उनके साथ हो ली। साहुकार की बेटी जहां मिट्टी निकाल रही थी उस स्थान पर स्याहु (स्याही) नामक जीव अपनी सात बेटों से साथ रहती थी। मिट्टी निखालते हुए ग़लती से साहूकार की बेटी की खुरपी के चोट से स्याहु (स्याही) का एक बच्चा मर गया। इस पर क्रोधित होकर स्याहू बोली मैं तुम्हारी कोख बांधूंगी।

स्याहु (स्याही) की वाणी सुनकर साहूकार की बेटी, अपनी सातों भाभीयों को बारी-बारी से विनती करती हैं कि वह उसके बदले अपनी कोख बंधवा लें। तब सबसे छोटी भाभी ननद के बदले अपनी कोख बंधवाने के लिए तैयार हो जाती है। कथा कहती हैं, इसके फल स्वरुप छोटी भाभी के जो बच्चे होते हैं वे सात दिन बाद मर जाते हैं। सात पुत्रों की इस प्रकार मृत्यु होने के बाद उसने गाँव के पंडित को बुलवाकर इसका कारण पूछा। पंडित ने सुरही गाय की सेवा करने की सलाह दी।

सुरही गाय बहु की सेवा से प्रसन्न होती है और उसे स्याहु (स्याही) के पास ले जाती है। रास्ते में थक जाने पर दोनों आराम करने लगते हैं अचानक साहुकार की छोटी बहू की नज़र एक तरफ जाती हैं, वह देखती है कि एक सांप गरूड़ पंख के बच्चे को डंसने जा रहा है और वह सांप को मार देती है। इतने में गरूड़ पंख वहां आ जाता है और खून बिखरा हुआ देखकर उसे लगता है कि छोटी बहु ने उसके बच्चे के मार दिया है इस पर वह छोटी बहू को चोंच मारना शुरू कर देता है। छोटी बहू इस पर कहती है कि उसने तो उसके बच्चे की जान बचाई है। गरूड़ पंख इस पर खुश होती है और सुरही सहित उन्हें स्याहु (स्याही) के पास पहुंचा देती है।

वहां स्याहु (स्याही) छोटी बहू की सेवा से प्रसन्न होकर उसे सात पुत्र और सात बहु होने का अशीर्वाद देती है। स्याहु (स्याही) के आशीर्वाद से छोटी बहु का घर पुत्र और पुत्र वधुओं से हरा भरा हो जाता है।

अहोईअष्टमी के व्रत में चन्द्रोदय-व्यापिनी कार्तिक कृष्ण अष्टमी को चुना जाता है। 31 अक्टूबर 2018 रात्रिव्यापिनी अष्टमी होने से शास्त्रीय निर्देश के अनुसार अहोई अष्टमी का व्रत इसी दिन करना चाहिए।

रमा एकादशी (रम्भा एकादशी) व्रत कथा

संकलन गुरुत्व कार्यालय

कार्तिक : कृष्ण पक्ष एकादशी

अर्जुन ने भगवान् श्री कृष्ण से कहा हे भगवन् ! कृप्या मुझे कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की एकादशी की कथा सुनाइए। इस एकादशी का नाम क्या है तथा इसमें किस देवता का पूजन किया जाता है । इस एकादशी का व्रत करने से क्या फल मिलता है ? कृपा करके यह सब विस्तारपूर्वक बताएं।

भगवान् श्रीकृष्ण बोले हे अर्जुन ! कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम रमा ह। इसके व्रत से व्यक्ति के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं ।

व्रत की कथा तुम ध्यान से सुनों

प्राचीनकाल में मुचुकुन्द नाम का एक राजा राज्य करता था । इन्द्र, वरूण, कुबेर आदि देवगण उसके मित्र थे । वह बड़ा सत्यवादी तथा भगवान् विष्णु का भक्त था । उसका राज्य सभी प्रकार से संपन्न था । राजा की चन्द्रभागा नामक एक कन्या थी जिसका विवाह उसने राजा चन्द्रसेन के पुत्र सोभन से करवा दिया । चन्द्रभागा राजा एकादशी का व्रत बड़े ही नीति-नियम के साथ करता था और अपने राज्य में सभी लोग यथा संभव कठोरता से इस नियम का पालन करते थे । एक बार की बात है कि सोभन कार्तिक महीने में अपने ससुराल आया था। उसी दौरान अतिपुण्यदायिनी रमा एकादशी आ गई । राज्य के नियम के अनुसार इस दिन सभी व्रत रखते थे । राजा की कन्या चन्द्रभागा ने सोचा कि मेरे पति तो व्रत-कर्म इत्यादि कार्यों में बड़े कमजोर हैं, वे एकादशी का व्रत कैसे करेंगे ! जबकि पिता के यहां तो सभी को व्रत करने का नियम है ।

मेरे पति ने यदि राजाज्ञा मानी, तो उन्हें बहुत कष्ट होगा । नियमानुसार राजा ने आज्ञा जारी की कि सारी प्रजा विधि-विधान पूर्वक एकादशी का व्रत करे । जब दशमी आई तब राज्य में ढिंढोरा पिटा, उसे सुनकर सोभन अपनी पत्नी के पास गया और बोला हे प्रिये ! तुम मुझे कुछ उपाय बतलाओ क्योंकि मैं व्रत नहीं कर सकता, यदि मैं व्रत करुंगा तो जीवित नहीं रह सका ।

पति की बात पर चन्द्रभागा बोली हे प्राणनाथ ! मेरे पिताजी के राज्य में एकादशी के दिन कोई भी भोजन नहीं कर सकता । यहां तक कि प्राणी-पशु-पक्षी आदि भी घास, अन्न, जल आदि ग्रहण नहीं करते; फिर भला मनुष्य कैसे भोजन कर सकता हैं ? यदि आप व्रत नहीं कर सकते तो किसी दूसरे राज्य में चले जाइए । क्योंकि यदि आप यहां रहें तो आपको व्रत अवश्य ही करना पड़ेगा ।

चन्द्रभागा बात पर सोभन ने कहा हे प्रिये ! तुम्हारा सुझाव उचित है । किन्तु मैं व्रत के डर से किसी दूसरे स्थान पर नहीं जाऊंगा अब मैं यह व्रत अवश्य ही करुंगा, परिणाम चाहे कुछ भी हो, भाग्य में लिखा कौन मिटा सकता है ।

उसने एकादशी का व्रत किया लेकिन दिन बीतते-बीतते सोभन भूख और प्यास से अत्यन्त व्याकुल होने लगा । सूर्य अस्त होया और रात्रि जागरण का समय आ गया। लेकिन रात्रि सोभन को अत्याधिक कष्ट देने वाली थी । दूसरे दिन का सूर्योदय होने से पूर्व ही भूख-प्यास से सोभन के प्राण निकल गए ।

राजा ने सोभन के मृत शरीर को जल-प्रवाह करा दिया और अपनी पुत्री को आज्ञा दी कि वह सती न हो कर भगवान् विष्णु पर भरोसा रखे ।

चन्द्रभागा अपने पिता की आज्ञानुसार सती नहीं हुई । वह अपने पिता के घर रहकर नीति-नियम से एकादशी के व्रत करने लगी ।

उधर रमा एकादशी के प्रभाव से सोभन को जल से निकाल लिया गया और भगवान् विष्णु की कृपा से उसे नया जीवन प्राप्त हुवा और उसे मन्दराचल पर्वत पर धन-धान्य से युक्त देवपुर नाम का एक उत्तम नगर राजा बना दिया गया । सोभन स्वर्ण तथा रत्नजड़ित सिंहासन पर सुन्दर वस्त्र तथा आभूषण धारण किए बैठता और गन्धर्व तथा अप्सरा नृत्य कर उसकी स्तुति करतेथे । उस समय राजा सोभन इन्द्र के समान प्रतीत हो रहा था ।

उस समय मुचुकुन्द नगर का सोमशर्मा नाम का एक ब्राह्मण तीर्थयात्रा के लिए निकला। जो घूमते-घूमते सोभन के राज्य में जा पहुंचा, सोभन को देखा । वह ब्राह्मण सोभनको अपने राज्य के राजा का जमाई जानकर उसके निकट गया । राजा सोभन ब्राह्मण को देख आसन से उठ खड़ा हुआ और अपने ससुर तथा स्त्री चन्द्रभागा के कुशल-मंगल पूछने लगा ।

सोमशर्मा बोला हे राजन् ! हमारे राजा तथा आपकी पत्नी चन्द्रभागा दोनों कुशल है । अब आप अपना वृत्तान्त बतलाइए । आपने तो रमा एकादशी के दिन अन्न-जल ग्रहण न करने के कारण प्राण त्याग दिए थे । मुझे बड़ा आश्चर्य है कि ऐसा सुंदर नगर आपको किस प्रकार प्राप्त हुआ ?

सोभन बोला हे ब्राह्मण देव ! यह सब कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की रमा एकादशी के व्रत का फल है । इसी से मुझे यह सुंदर नगर प्राप्त हुआ है, लेकिन यह अस्थिर है ।

इस पर ब्राह्मण बोला हे राजन् ! यह अस्थिर क्यों है और स्थिर किस प्रकार हो सकता है, आप मुझे समझाइए । यदि इसके स्थिर करने के लिए मैं कुछ कर सका तो वह उपाय मैं अवश्य ही करुंगा ।

सोभन बोला हे देव ! मैंने वह व्रत विवश होकर तथा श्रद्धारहित किया था । उसके प्रभाव से मुझे यह अस्थिर नगर प्राप्त हुआ हैं, लेकिन यदि आप इस वृत्तान्त को में पत्नी चन्द्रभागा से कहोगे तो वह इसको स्थिर कर सकती है ।

ब्राहमण अपने नगर लौटकर उसने चन्द्रभागा से समस्त वृत्तान्त कहा । इस पर राजकन्या चन्द्रभागा बोली हे ब्राहमण देव ! आप क्या वह सब आप देखकर आये हैं ! या अपना स्वप्न में देखा दृश्य कह रहे हैं ?

ब्राहमण बोला हे पुत्री ! मैंने तेरे पति सोभन तथा उसके नगर को प्रत्यक्ष देखा है, परन्तु वह नगर अस्थिर है । तूम कोई ऐसा उपाय करो जिससे कि वह स्थिर हो जाय ।

चन्द्रभागा बोली हे महाराज ! आप मुझे उस नगर में ले चलिए, मैं अपने पति को देखना चाहती हूं । मैं अपने व्रत के प्रभाव से उस नगर को स्थिर कर लूंगी ।

चन्द्रभागा के बात को सुनकर ब्राहमण उसे वामदेवजी के आश्रम में ले गया । वामदेवजी ने उसके वृत्तान्त को सुनकर चन्द्रभागा का मन्त्रों से अभिषेक किया । चन्द्रभागा मन्त्रों तथा व्रत के प्रभाव से दिव्य देह धारण करके पति के पास गई । सोभन ने अपनी स्त्री चन्द्रभागा को देखकर उसे प्रसन्नतापूर्वक आसन पर अपने पास बैठा लिया ।

चन्द्रभागा बोली हे प्राणनाथ ! अब आप मेरे एकादशी व्रत के पुण्य को सुनिए, जब मैं अपने पिता के गृह में आठ वर्ष की थी, तब ही से मैं पूर्ण विधि-विधान से एकादशी का व्रत कर रही हूं । उन्हीं व्रतों के प्रभाव से आपका यह नगर स्थिर हो जाएगा जो अब प्रलय के अन्त तक स्थिर रहेगा। चन्द्रभागा दिव्यरुप धारण करके तथा दिव्य वस्त्र-अलंकारों से सुशोभित होकर अपने पति के साथ मन्दराचल पर्वत पर सुखपूर्वक रहने लगी ।

हे पार्थ ! यह रमा एकादशी का विशेष माहात्म्य है । जो मनुष्य रमा एकादशी के व्रत को विधि-विधान से करते हैं, उनके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं । जो मनुष्य रमा एकादशी का माहात्म्य सुनते हैं, वह अन्त समय विष्णुलोक को जाते हैं ।

वास्तु के अनुसार मानसिक अशांति निवारण उपाय

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

आज की भागदौड़ से भरी जिंदगी में हर व्यक्ति अपने काम में व्यस्त हैं।

जिस कारण से अधिकतर लोग मानसिक शांति से ग्रस्त होते है। व्यस्ता एवं भौतिकता से भरी दिनचार्या में व्यक्ति के पास अपने स्वयं के लिए भी वक्त ही नहीं होता है। यदि आप इस तरह की परेशानी से ग्रस्त हैं और आप मानसिक कष्ट तनाव इत्यादी से मुक्ति चाहते हैं, तो इस वास्तु सुझावो को जीवन में अवश्य आजमाकर देख ले आपको निश्चित लाभ प्राप्त होगा।

- अपने शयन कक्ष में रात में झूठे बर्तन न रखें। सोने से पूर्व बर्तनो को साफ करले। इससे स्त्री वर्ग का स्वास्थ्य प्रभावित होता हैं व धन का अभाव बना रहता हैं।
- मानसिक तनाव हो, जाए तो कमरे में शुद्ध घी का दीपक जला कर रखें।
- शयन कक्ष में झाड़ू इत्यादि सफाई की सामग्री न रखें। इससे व्यर्थ की चिंता रहेगी।
- यदि मानसिक तनाव अधिक हो जाएं तो, तकिए के नीचे लाल चंदन रखकर सोएं लाभ प्राप्त होगा।
- सुबह-संध्या पूजन में घी और कपूरका दिप अवश्य जलाये। जिससे निवास स्थान या व्यवसायिक स्थानो से नकारात्मक उर्जा दूर होती हैं।
- शास्त्रोक्त नियमो के अनुसार संध्या समय अर्थात धूप-दिप के समय सोना, खाना, स्नान करना वर्जित माना गया हैं। अतः इन कार्यो को करने से त्यागदे।
- संध्या समय अर्थात धूप-दिप के समय हाथ-पैर धो सकते हैं।
- धूप-दिप के समय अपने निवास स्थान या व्यवसायिक स्थानो पर सुगंधित व पवित्र अगरबत्ति, धुप इत्यादि अवश्य करें।
- यदि अत्याधिक मानसिक तनाव से ग्रस्त हो, तो चांदी के गिलास में पानी पीये। जिससे तनाव इत्यादि नियंत्रण में रहेगा।
- बियर, शराब इत्यादि भवन या निवास्थान पर नहीं पीने चाहिये। यदि पीते हैं तो बैड रुम में कदापी न पीये। अन्याथा क्लेश व रोग में वृद्धि हो सकती हैं।
- घर की दिवारो पर बहते झरने, तालब इत्यादि के सौम्य चित्र लगाए। शेर, बाध, हथियार इत्यादि नकारात्मक उर्जा उत्पन्न करने वाले चित्रो को लगाने से परहेज करें।
- नुकीले या धार-दार हथियार, पौधे इत्यादि रखने से बचे इस्से अत्याधिक क्रोध व तनाव होता हैं।
- रसोई घर में गैस के निकट वोस-बेजिंग या अन्य पानी का स्त्रोत न रखे। अन्यथा घर में क्लेश व बिमारिया लगी रहेगी।
- घर की दिवारो पर हल्के रंगो का प्रयोग करें। भडकिले रंगो के इस्तेमाल से मानसिक अशांति बनी रहती हैं।
- घर की दिवारो और छत पर मकडिके जाले दिखे तो तुरंत सफाई करदे। अन्यथा मानसिक तनाव, रोग, ऋण इत्यादि की वृद्धि होगी।
- यदि नया भवन बना रहे हैं, तो रसोई घर में काले पत्थरो के प्रयोग से बचे। यदि पहले से लगवाये हैं, तो सुविधा देख कर बदलवा लेना लाभप्रद रहेगा।
- शास्त्रोक्त विधान के अनुसार इन छोटे-छोटे लगने वाले उपाय अत्याधिक प्रभावशाली होते हैं। छोटी लगने वाली बाते समय के साथ साथ बडी होने लगती हैं। अतः उक्त कारणो के उत्पन्न होने से पूर्व उसे रोकने का प्रयास लाभप्रद होता हैं।
- मानसिक तनाव दूर करने हेतु निवास स्थान या व्यवसायीक स्थान का वातावरण सुगंधित रहे इस लिये हल्की सुगंध वाली धूप-अगरबत्ती, या हलके सुगंध के एर फ्रेसनर इत्यादिका नियमित प्रयोग करे। उग्र महक या भडकीली महेक वाली सुगंधित सामग्री से मन अशांत व अत्याधिक उत्तेजित अवस्था में रहता हैं अतः हल्की महक वाली सामाग्री का प्रयोग करें।

सर्व कार्य सिद्धि कवच



जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्रेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

ज्योतिष के अनुशार किस नक्षत्रों में धारण करें कपडे ?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

ज्योतिष के अनुशार कुछ विशेष नक्षत्रो में नए कपड़े पहने से इसका शुभ फल प्राप्त होता हैं, एवं कुछ नक्षत्रो में नए कपड़े पहनने से स्वास्थ्य, आर्थिक परेशानि इत्यादि समस्याए उत्पन्न होती हैं।

नये कपड़े धारण करने हेतु अश्विनी, रोहिणी, पुष्य, चित्रा, पूनर्वसु, उत्तर फाल्गुनि, हस्त, विशाखा, अनुराधा, उत्तरषाढ, धनिष्ठा, उत्तर भाद्रपद, रेवति, शुभ माने गये हैं।

अश्विनी (स्वामी-केतु):
अश्विनी नक्षत्र में नए कपड़े पहने से किसी भी दोस्त या रिश्तेदार के द्वारा उपहार प्राप्त होता हैं।

भरणी (स्वामी-शुक्र):
भरणी नक्षत्र में नए कपड़े पहने से बचना चाहिये इस नक्षत्र में नए कपड़े पहने से बदनामी होने की आशंका अधिक रेहती हैं।

कृतिका (स्वामी-सूर्य):
कृतिका नक्षत्र में नए कपड़े पहने से बचना चाहिये इस नक्षत्र में नए कपड़े पहने से घर या व्यवाय के स्थान पर अग्नि भय बना रहता हैं। हैं।

रोहिणी (स्वामी-चंद्रमा):
रोहिणी नक्षत्र में नए कपड़े पहने से किसी भी स्त्रोत से अत्याधिक धनलाभ के योग बनता हैं।

मृगशिरा (स्वामी-मंगल):
मृगशिरा नक्षत्र में नए कपड़े पहने से उन कपडो के जल्द खराब होने की संभावना रेहती हैं।

आद्रा (स्वामी-राहू):
आद्रा नक्षत्र में नए कपड़े पहने से धन नाश की आशंका रेहती हैं।

पूनर्वसु (स्वामी-गुरू):
पूनर्वसु नक्षत्र में नए कपड़े पहने से अस्वीकृति या मानसिक त्रासदी जेसि कठिनाई का सामना करना पडता हैं।

पुष्य (स्वामी-शनि):
पुष्य नक्षत्र में नए कपड़े पहने से किसी भी स्रोत द्वारा उच्च स्तर का धन लाभ होने का योग बनता हैं।

आशलेषा (स्वामी-बुध):
आशलेषा नक्षत्र में नए कपड़े पहने से बचे इस नक्षत्र में नए कपड़े पहने से कपड़े के नाश होने की संभावना होती हैं।

मघा (स्वामी-केतु):
मघा नक्षत्र में नए कपड़े पहने से बचना चाहिये इस नक्षत्र में नए कपड़े पहने से जीवन मी उन्नति हेतु कठिनाई उतपन्न होती हैं।

पूर्वा फालगुनि (स्वामी-शुक्र):
पूर्वा फालगुनि नक्षत्र में नए कपड़े पहने से बचना चाहिये इस नक्षत्र में नए कपड़े पहने से बहोत सारी परेशानियों से सम्मुखीन होना पडता हैं।

उत्तर फाल्गुनि (स्वामी-सूरय):
उत्तर फाल्गुनि नक्षत्र में नए कपड़े पहने से आमदनी में वृद्धि होकर जीवन में उन्नति प्राप्त होती हैं।

हस्त (स्वामी-चंद्रमा):
हस्त नक्षत्र में नए कपड़े पहने से भाग्य एवं धन की वृद्धि होकर सभी प्रकार की सुख सुविधा प्राप्त होती हैं।

चित्रा (स्वामी-मंगल):
चित्रा नक्षत्र में नए कपड़े पहने से रिश्तेदार या मित्र वर्ग से अन्य कपड़े उपहार में मिलते हैं।

स्वाती (स्वामी-राहू):

स्वाती नक्षत्र में नए कपड़े पहने से मित्र वर्ग द्वारा उत्तम उपहार की प्राप्ति होती हैं।

विशाखा (स्वामी-गुरू):

विशाखा नक्षत्र में नए कपड़े पहने से रिश्तेदार एवं मित्र वर्ग द्वारा प्रसिद्धि के योग प्रबल होते हैं।

अनुराधा (स्वामी-शनि):

अनुराधा नक्षत्र में नए कपड़े पहने से नये दोस्त एवं सहकर्मी सें लाभ प्राप्त होता हैं।

ज्येष्ठा (स्वामी-बुध):

ज्येष्ठा नक्षत्र में नए कपड़े पहने से किसी भी स्त्रोत से उत्तम धन की प्राप्ति होती हैं।

मूला (स्वामी-केतु):

मूला नक्षत्र में नए कपड़े पहने से बचे चाहिये इस नक्षत्र में नए कपड़े पहने से कपड़ो का विनाश शीघ्र हो जाता हैं।

पूर्वाषाढ़ा (स्वामी-शुक्र):

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में नए कपड़े पहने से बचना चाहिये इस नक्षत्र में नए कपड़े पहने से स्वास्थ्य समस्या होकर रोग उत्पन्न होते हैं।

उत्तराषाढ़ा (स्वामी-सूर्य):

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में नए कपड़े पहने से सबके साथ मे अच्छे सम्बन्ध विकसित होते हैं।

श्रवण (स्वामी-चंद्रमा):

श्रवण नक्षत्र में नए कपड़े पहने से बचे इस नक्षत्र में नए कपड़े पहने से आंखो से संबंधित समस्या उत्पन्न होती हैं।

धनिष्ठा (स्वामी-मंगल):

धनिष्ठा नक्षत्र में नए कपड़े पहने से नौकरी व्यवसाय में नये आय के स्त्रोत का योग बनते हैं।

शतभिषा (स्वामी-राहू):

शतभिषा नक्षत्र में नए कपड़े पहने से बचे क्योकि इस्स नक्षत्र में नए कपड़े पहने से विष या किसी जिव जंतु के काटने का भय रेहता हैं।

पूर्वा भाद्रपद (स्वामी-गुरू):

पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में नए कपड़े पहने से बचना चाहिये ये इस नक्षत्र में नए कपड़े पहने से स्वयं के लिये हानिकारक होता हैं।

उत्तर भाद्रपद (स्वामी-शनि):

उत्तर भाद्रपद मे यदि आपका जन्म हुवा हैं तो आपकी संतान को इस नक्षत्र में नए कपड़े नहीं पहना ने चाहिये नहीं तो उनके लिये हानिकारक हैं।

रेवती (स्वामी-बुध):

रवती नक्षत्र में नए कपड़े पहने से एकाधिक स्त्रोत से धन लाभ प्राप्त होता हैं।

अंग फड़कने से शुकन अपशुकन

संकलन गुरुत्व कार्यालय

मानव शरीर के विभिन्न अंगों में कभी कभी फड़क होती हैं। अंग फड़कने का कारण मानव शरीर में उतपन्न होने वाले वायु-विकार आदि के कारण शरीर कि माशपेशी में रह रहकर थोडा उभरना और दबना बताया जाता हैं।

हमारे भारत में अंगो के फड़कने के आधार पर शुभ-अशुभ ज्ञात करने की धारणा सालो से प्रचलित रही हैं। प्रायः पुरुष का दाहिना (Right) अंग और स्री का बांया (Left) अंग फड़कना शुभ माना जाता हैं।

- यदि बाएं पैर की पहली और आखिरी उंगली फड़के, तो लाभ होता हैं।
- यदि दाएं पैर की पहली और आखिरी उंगली फड़के तो अशुभ होता हैं।
- यदि पांव की पिंडलीयां फड़कने से काम में बाधा उतपन्न होती हैं एवं यह शत्रु द्वारा परेशानी का संकेत हैं। दायां घुटना फड़के, तो अशुभ फल कि प्राप्ति और बायां फड़के, तो शुभ फल कि प्राप्ति होती हैं।
- यदि बायां पैर फड़कना शुभ होता हैं, दायां पैर फड़कने से मुसीबतों का अंत होने का संकेत हैं।
- यदि बाईं जांघ के फड़कने से दोस्त से सहायता मिलने का संकेत हैं।
- यदि दाईं जांघ फड़कने से शत्रु शांत होने का संकेत हैं।
- यदि दाएं हाथ का अंगूठा फड़कने से शुभ समाचार मिलने का संकेत हैं।
- यदि बाएं हाथ का अंगूठा फड़कने से हानी होने का संकेत हैं।
- यदि यदि मस्तक फड़के तो भूमि लाभ मिलने का संकेत हैं।
- यदि यदि कंधा फड़के तो भोग-विलास में वृद्धि होने का संकेत हैं।
- यदि दोनों भौंहों के मध्य भाग में फड़कन होतो सुख प्राप्ति का संकेत हैं।
- यदि कपाल फड़के तो शुभ कार्य होने का संकेत हैं।
- यदि आँख का फड़कना धन प्राप्ति का संकेत हैं।
- यदि आँख के कोने फड़के तो आर्थिक उन्नति होने का संकेत हैं।
- यदि आँखों के पास का हिस्सा फड़के तो प्रिय व्यक्ति से मिलन होने का संकेत हैं।
- यदि हाथों का फड़कना उत्तम कार्य द्वारा धन प्राप्ति का संकेत हैं।
- यदि वक्षःस्थल का फड़कना विजय प्राप्ति का संकेत हैं।
- यदि हृदय फड़के तो इष्ट सिद्धी प्राप्त होने का संकेत हैं।
- यदि नाभि के फड़क्ने से स्त्री वर्ग को हानि होने का संकेत हैं।
- यदि पेट का फड़कना कोष वृद्धि होने का संकेत हैं।
- यदि गुदा का फड़कना वाहन सुख कि प्राप्ति का संकेत हैं।
- यदि कण्ठ के फड़कने से ऐश्वर्य लाभ कि प्राप्ति का संकेत हैं।
- यदि मुख के फड़कने से मित्र द्वारा लाभ होने का संकेत हैं।
- यदि होठों का फड़कना प्रिय वस्तु की प्राप्ति का संकेत हैं।

मनोवांछित फलो कि प्राप्ति हेतु सिद्धि प्रद गणपति स्तोत्र

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय



प्रतिदिन इस स्तोत्र का पाठ करने से मनोवांछित फल शीघ्र प्राप्त होते हैं।

मनोवांछित फल प्राप्त करने हेतु गणेशजी के चित्र या मूर्ति के सामने मंत्र जाप कर सकते हैं। पूर्ण श्रद्धा एवं पूर्ण विश्वास के साथ मनोवांछित फल प्रदान करने वाले इस स्तोत्र का प्रतिदिन कम से कम 21 बार पाठ अवश्य करें।

अधिकस्य अधिकं फलम्।

जप जितना अधिक हो सके उतना अच्छा है। यदि मंत्र अधिक बार जाप कर सकें तो श्रेष्ठ।

प्रातः एवं सायंकाल दोनों समय करें, फल शीघ्र प्राप्त होता है।

कामना पूर्ण होने के पश्चयात भी नियमित स्त्रोत ला पाठ करते रहना चाहिए। कुछ एक विशेष परिस्थिति में पूर्व जन्म के संचित कर्म स्वरूप प्रारब्ध की प्रबलता के कारण मनोवांछित फल की प्राप्ति या तो देरी संभव हैं!

मनोवांछित फल की प्राप्ति के अभाव में योग्य विद्वान की सलाह लेकर मार्गदर्शन प्राप्त करना उचित होगा। अविश्वास व कुशंका करके आराध्य के प्रति अश्रद्धा व्यक्त करने से व्यक्ति को प्रतिकूल प्ररिणाम हि प्राप्त होते हैं। शास्त्रोक्त वचन हैं कि भगवान (इष्ट) कि आराधना कभी व्यर्थ नहीं जाती।

मंत्र:- *गणपतिर्विघ्नराजो लम्बतुण्डो गजाननः। द्वैमातुरश्च हेरम्ब एकदन्तो गणाधिपः॥*
विनायकश्चारुकर्णः पशुपालो भवात्मजः। द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्॥
विश्वं तस्य भवेद्वश्यं न च विघ्नं भवेत् क्वचित्। (पद्म पु. पृ. 61।31-33)

भावार्थ: गणपति, विघ्नराज, लम्बतुण्ड, गजानन, द्वैमातुर, हेरम्ब, एकदन्त, गणाधिप, विनायक, चारुकर्ण, पशुपाल और भवात्मज- गणेशजी के यह बारह नाम हैं। जो व्यक्ति प्रातःकाल उठकर इनका नियमित पाठ करता हैं, संपूर्ण विश्व उनके वश में हो जाता हैं, तथा उसे जीवन में कभी विघ्न का सामना नहीं करना पड़ता।

रत्नों का अद्भुत रहस्य

संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...

मोती

चंद्र का रत्न मोती चंद्र ग्रह के शुभ फलों की प्राप्ति हेतु धारण किया जाता हैं। मोती को चंद्र रत्न माना गया है।

मोती विभिन्न भाषाओ मे निम्न लिखित नामो से जाना जात है।

हिन्दी मे :- मोती, मुक्ता

सस्कृत मे :- मुक्ता, सौम्या, नीरज, तारका, शशिरत्न, मौक्तिक, तारा, स्वप्नसार, इन्दुरत्न, मुक्ताफल, शूलिज, शोक्तिक, शशिप्रिय, जीवरत्न, बिन्दुफल, शुक्तिमणि, रसाईभव, सौकितक, मूर्वारिद आदि।

फ़ारसी मे :- मुखारिद,

अरबी मे :- मुखारिद,

लेटिन मे :- मार्गोरिटा

अंग्रेजी :- पर्ल

मोती की उत्पत्ति

प्रायः मोती स्वेत रंग का ही होता हैं। स्वेत रंग के अलावा गुलाबी, लाल, पीले, नीले, काले, हरे आदि रंगो में भी पाये जाते हैं।

मोती एक जैविक रत्न होता है। क्योकि मोती का निर्माण भी समुद्र में सीप/छिप में होता है। समुद्र में एक विशेष प्रकार का जीव होता हैं जिसे घोंघा (मूसेल) नाम से जाना जाता हैं। यह घोंघा सीप के अंदर अपना घर बनाकर रहता है। मोती के विषय में एसी मान्यता है की जब चंद्रमा स्वाति नक्षत्र में होता हैं तब पानी की टपकने वाली बूंद जब घोंघे के खुले हुए मुंह में पड़ती है तब मोती का जन्म होता है।

लेकिन एसा बहोत कम होत हैं।

ज्यादातर मोती रेत के कण या कोई छोटे जीव से बनते हैं। वैज्ञानिक मत से घोंघा के शरीर पर घागे के समान अंग होते हैं। जिसकी मदद से वह अपने आपको बडी शिला/ पत्थर पर जलीय स्थानों में अपने आपको चिपकाता हैं। घोंघा जल में एक बर्ष में दो ऋतु में जन्म लेते हैं। जानकारो की माने तो जो घोंघा बडी शिला का सहारा प्राप्त कर लेते हैं वहीं घोंघा इस योग्य होता हैं की वह मोति बना सकते हैं।

घोंघा मांस के दो आवरण के अंदर होता हैं जिसे मेण्टल कहा जाता हैं। यह मेण्टल सूक्ष्म छत्तों से ढंका होता हैं, जिसमें एक विशेष प्रकार के कठोर पदार्थों के मिश्रण को निकालने की क्षमता होती हैं। यह मिश्रण जमा होते-होते धीरे-धीरे सीप का रुप ले लेता हैं। यह सीपियां हर घोंघे को ढंककर रखती हैं और उसकी रक्षा करती हैं। घोंघा अपनी आवश्यक्ता के अनुसार जरुरत पडने पर सीप को खोलकर अपना भोजन प्राप्त करके सीप को पुनः बंध कर लेता हैं।

प्रायः सीप में चार पर्ते होती हैं। यह चारों पर्ते बहोत धीरे-धीरे बनती हैं एवं विभिन्न परतों से पडते हुए प्रकाश की रश्मिसे मोती में सुंदरता आती हैं।

घोंघा उक्त क्रियाओं से अपने लिये सीप में घर बना लेता हैं। जब कोई भिन्न पदार्थ जैसे रेत के कण

या किडा, घोंघे के शरीर से लग जाता हैं तो घोंघा इस कण से मुक्ति पाने के लिये पूर्ण कोशिश करता हैं और कभी सफल तो कभी असफल होता हैं। जब घोंघा असफलता प्राप्त करता हैं, तब घोंघा उस कण को सीप में मौजुद पदार्थो से उसे ढंकने की कोशिश करता हैं और उस पर परत दर परत चढाता हैं। जिस पदार्थ से सीप बनती हैं उसी पदार्थ को वह उस कण पर चढाता हैं। समय के साथ यह परते मोति का पूर्ण रुप धारण कर लेता हैं। मोती का आकार भिन्न-भिन्न होते हैं। मोती गोल, अण्डाकार, नासपति आदि अनियमित आकार के होता हैं।

घोंघा ने बनाये सीप या मेण्टल के बिच में जब कोई चिपकने वाला कीडा फस कर छेद कर देता हैं तब जो मोती बनते हैं वह सीप से चिपक जाते हैं। उन मोतीयों को सीप से काटकर निकाल ना पडता हैं। इस तरह प्राप्त होने वाले मोती चपटे एवं अनियमित आकार के होते हैं। जिन्हें बिल्स्टर पर्ल कहा जाता हैं। गोल मोती से उनका मूल्य कम होता हैं।

मान्यता के अनुसार मोती विशेष रुप से अपने प्राकृतिक रूप में प्राप्त होता है। मोती घोंघे में गोल, अण्डाकार अथवा टेढ़ा-मेढ़ा जैसा भी बनता हैं, वह उसी रूप में उपलब्ध होता हैं।

अन्य रत्नों की भांति इसकी कटिंग तथा पॉलिस आदि नहीं की जाती हैं। मोती को माला में पिरोने के लिए इनमें छिद्र ही किये जाते हैं।

लेकिन आज समय के साथ आधुनिक उपकरणो एवं नवीनतम तकनिको की मदद से मोती को पॉलिस अवश्य किया जाता हैं। यदि किसी मोती का आकार गोल व अंडाकर या टेढ़ा-मेढ़ा होने के उपरांत उसका कोई एक हिस्सा नुकीला हो तो उसे काटकर पॉलिस कर उसकी उपरी परतो को हटा दिया जाता हैं। यह क्रिया सभी नुकीले मोती में संभव नहीं होती कुछ ही मोतीयों में संभव हो पाती हैं।

मोती के लाभ:

- विद्वान ज्योतिषीय के अनुसार जिन लोगों का मन अशांत रहता हैं और जिनको अधिक क्रोध आता है उन्हें मोती धारण करने से विशेष लाभ प्राप्त होते हैं।
- मोती मान की एकाग्रता बढ़ाता हैं एवं मानसिक शांति प्रदान करने मे सहायक होता हैं।
- मोती धारण करने से व्यक्ति को मान-प्रतिष्ठा एवं धन, ऎश्वर्य एवं वैभव की प्राप्ति होती हैं।
- मोती रोगों को नाश करने में भी सहायक होता हैं।
- ज्वर में मोती धारण करना लाभप्रद रहता हैं।
- यह हृदय गति को नियंत्रण करने में सहायक होता हैं।
- मोती आंत्रशोथ, अल्सर एवं पेट एवं आदि बीमारियों में लाभदायी होता हैं।
- ऐसी मान्यता है, कि जो व्यक्ति शुद्ध मोती धारण करते हैं उस पर देवी लक्ष्मी प्रसन्न रहती हैं और उसे धन का अभाव नहीं होता।
- मोती दाम्पत्य सम्बन्ध में सुधार लाने में भी लाभदायक होता हैं।
- धन प्राप्ति के लिए पीले रंग की आभा वाला मोती धारण करना लाभदायक होता हैं।
- बौद्धिक क्षमता में वृद्धि के लिए लाल रंग की आभा वाला मोती धारण करना लाभदायक होता हैं।
- मान-सम्मान एवं प्रसिद्धि के लिये सफेद रंग की आभा वाला मोती धारण करना लाभदायक होता हैं।
- ईश्वरीय कृपा प्राप्ति के लिए नीले रंग की आभा वाला मोती धारण करना लाभदायक होता हैं।

मान्यता:

- कांच के गिलास में पानी डाल कर उसमें मोती रखा जाता है. अगर इस पानी से किरण निकल रही हों तो मोती को असली समझा जाता है.
- मिट्टी के बरतन में गौमूत्र डालकर उसमें मोती रखा जाता है. रातभर मोती को इसी बरतन में रखा जाता है. सुबह मोती को देखा जाता है. मोती पर इस उपाय का कोई प्रभाव नहीं पडा हों और मोती अंखड हों तो मोती को असली समझा जाता है.
- मोती को अनाज के भूसे से जोर से रगडा जाता है. मोती के नकली होने पर उसका चूरा हो जाता है.

मोती पर कोई प्रभाव नहीं पड रहा हों तो यह मोती असली होता है

- इस उपाय के अन्तर्गत मोती को शुद्ध गाडे घी में कुछ देर के लिये रखा जाता है. अगर मोती असली होने पर घी के पिघलने की संभावनाएं बनती हैं।

मोती के दोष

- यदि मोती टूटा हुआ हो, तो एसा मोती पहनने से मन में चंचलता व्याकुलता व कष्ट कि वृद्धि होती हैं।
- यदि मोती में चमक न हो तो उस मोती को धारण करने से निर्धनता आती हैं।
- यदि मोती में गड्ढा हो, तो एसा मोती स्वास्थय एवं धन सम्पदा को हानि पहुँचाने वाला होता हैं।
- यदि मोती चोंच के जैसा आकार हो या उस पर दाग-धब्बे हो, तो एसा मोती धारण करने से पुत्र से संबंधित कष्ट होता हैं।
- यदि मोती चपटा हो तो, वह मोती सुख सौभाग्य का नाश करने वाला व चिंता बढाने वाला होता हैं।
- यदि मोती पर छोटे काले दाग तो, एसा मोती धारण करने से स्वास्थय कि हानि होती हैं।
- यदि मोती पर रेखाएं हो तो, एसा मोती धारण करने से यश एवं ऐश्वर्य की हानि होती हैं।
- यदि मोती के चारों तरफ गोल रेखा हो तो, एसा मोती धारण करने से भयवर्धक तथा स्वास्थय व हृदय को हानि पहुँचाने वाला होता हैं।
- यदि मोती पर लहरदार रेखाएं दिखाई देती हो तो, एसा मोती धारण करने से मन में उद्विग्नता व धन कि हानि होती हैं।
- यदि मोती दिखने में लंबा या बेडौल हो तो, एसा मोती धारण करने से बल व बुद्धि की हानि होती हैं।
- यदि मोती पर छाला के समान धब्बे उभरे हो तो, एसा मोती धारण करने से धन-सम्पदा व सौभाग्य का नष्ट करने वाला होता हैं।
- यदि मोती की सतह फटी हुई हो हो तो, एसा मोती धारण करने से नाना प्रकार के कष्ट होते हैं।
- यदि मोती पर काले रंग की आभा युक्त हो तो, एसा मोती धारण करने से अपयश कि प्राप्ति होती हैं।
- यदि मोती तीन कोने वाला हो तो, एसा मोती धारण करने से बल एवं बुद्धि का नाश होता हैं और नपुंसकता की वृद्धि होती हैं।
- यदि मोरी ताम्र वर्ण का हो तो, एसा मोती धारण करने से भाई-बहन व परिवार का नाश होता हैं।
- यदि मोती चार कोणों से युक्त हो तो, एसा मोती धारण करने से पत्नी का नाश होता हैं।
- यदि मोती रक्त वर्ण का हो तो, एसा मोती धारण करने से चारों तरफ से विपदा आन पड़ती हैं।

प्रकृति की अलौकिक देन रुद्राक्ष

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...

रुद्राक्ष धारण करना क्यों कल्याणकारी हैं?

रुद्र के अक्ष से प्रकट होने के कारण रुद्राक्ष को साक्षात शिव का लिंगात्मक स्वरुप माना गया हैं। विद्वानो का कथ हैं की रुद्राक्ष में एक विशिष्ट प्रकार की दिव्य उर्जा शक्ति समाहित होती हैं। प्रायः सभी ग्रंथकारों व विद्वानो ने रुद्राक्ष को असह्य पापों को नाश करने वाला माना हैं।

इस लिए शिव माहा पुराण में उल्लेख किया गया हैं।

शिवप्रियतमो ज्ञेयो रुद्राक्षः परपावनः।
दर्शनात्स्पर्शनाज्जाप्यात्सर्वपापहरः स्मृतः॥

अर्थात: रुद्राक्ष अत्यंत पवित्र, शंकर भगवान का अति प्रिय हैं। उसके दर्शन, स्पर्श व जप द्वारा सर्व पापों का नाश होता हैं।

रुद्राक्ष धारणाने सर्व दुःखनाशः

अर्थात: रुद्राक्ष असंखय दुःखों का नाश करने वाला हैं।

रुद्राक्ष शब्द के उच्चारण से गोदा का फल प्राप्त होता हैं।

रुद्राक्ष के विषय में रुद्राक्ष जावालोपनिषद में स्वयं भगवान कालग्नी का कथन हैं:

तद्रुद्राक्षे वाग्विषये कृते दशगोप्रदानेन
यत्फलमवाप्नोति तत्फलमश्नुते ।
करेण स्पृष्टवा धारणमात्रेण द्विसहस्त्र
गोप्रदान फल भवति ।
कर्णयोर्धार्यमाणे एकादश सहस्त्र गोप्रदानफलं भवति ।
एकादश रुद्रत्वं च गच्छति ।
शिरसि धार्यमाणे कोटि ग्रोप्रदान फलं भवति ।

अर्थात: रुद्राक्ष शब्द के उच्चारण से दश गोदान (गाय का दान) का फल प्राप्त होता हैं। रुद्राक्ष का स्पर्श करने व धारण करने से दो हजार गोदान (गाय का दान) का फल मिलता हैं। दोनो कानो पर रुद्राक्ष धारण करने से ग्यारा हजार गोदान (गाय का दान) का फल मिलता हैं। गले में रुद्राक्ष धारण करने से करोडो गोदान (गाय का दान) का फल मिलता हैं।

अलग-अलग रंगों के रुद्राक्ष में अलग-अलग प्रकार की शक्तियां निहित होती हैं। इस लिये रंगो के अनुसार रुद्राक्ष का प्रभाव मनुष्य पर पड़ता हैं।

ब्राह्मणाः क्षत्रियाः वैश्याः शूद्राश्चेति शिवाज्ञया ।
वृक्षा जाताः पृथिव्यां तु तज्जातीयोः शुभाक्षमः ।
श्वेतास्तु ब्राह्मण ज्ञेयाः क्षत्रिया रक्तवर्णकाः ॥
पीताः वैश्यास्तु विज्ञेयाः कृष्णाः शूद्रा उदाहृताः ॥

अन्य श्लोक में उल्लेख हैं:

ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्रा जाता ममाज्ञया ॥
रुद्राक्षास्ते पृथिव्यां तु तज्जातीयाः शुभाक्षकाः ॥
श्वेतरक्ताः पीतकृष्णा वर्णाज्ञेयाः क्रमाद्बुधैः ॥
स्वजातीयं नृभिर्धार्यं रुद्राक्षं वर्णतः क्रमात् ॥

श्वेत रंग: सफेद रंग वाले रुद्राक्ष में सात्त्विक उर्जायुक्त ब्रह्म स्वरुप शक्ति समाहित होती हैं। इस लिए ब्राह्मण को श्वेत वर्ण का रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

रक्तवर्णीय (ताम्र के समान आभायुक्त) : रक्त रंग की आभायुक्त रुद्राक्ष में राजसी उर्जायुक्त शत्रुसंहारक शक्ति समाहित होती हैं। इस लिए क्षत्रिय को रक्तवर्णीय रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

पीतवर्णीय (कांचन या पीली आभायुक्त) : पीले रंग की आभायुक्त रुद्राक्ष में राजसी व तामसी दोनों प्रकार की संयुक्त उर्जा शक्ति समाहित होती हैं। इस लिए वैश्य को पीतवर्णीय रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

कृष्णवर्णीय: काले रंग की आभायुक्त रुद्राक्ष में तामसी उर्जायुक्त सेवा व समर्पणात्मक शक्ति समाहित होती हैं। इस लिए शूद्र को कृष्णवर्णीय रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

यह शास्त्रों मे उल्लेखित विद्वान ऋषियों का निर्देश है कि मनुष्य को अपने वर्ण के अनुरूप श्वेत, रक्त, पीत

और कृष्ण वर्ण के रुद्राक्ष धारण करने चाहिए। विशेषकर भगवान शिव के भक्तो के लिये तो रुद्राक्ष को धारण करना परम आश्यक हैं।

वर्णैस्तु तत्फलं धार्यं भुक्तिमुक्तिफलेप्सुभिः ॥
शिवभक्तैर्विशेषेण शिवयोः प्रीतये सदा ॥
सर्वाश्रमाणांवर्णानां स्त्रीशूद्राणां।
शिवाज्ञया धार्याः सदैव रुद्राक्षाः॥

सभी आश्रमों (ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ, गृहस्थ और संन्यासी) एवं वर्णों तथा स्त्री और शूद्र को सदैव रुद्राक्ष धारण करना चाहिये, यह शिवजी की आज्ञा है!

रुद्राक्ष को तीनों लोकों में पूजनीय हैं। रुद्राक्ष के स्पर्श से लक्ष गुणा तथा रुद्राक्ष की माला धारण करने से करोड़ गुना फल प्राप्त होता हैं। रुद्राक्ष की माला से मंत्र जप करने से अनंत कोटि फल की प्राप्ति होती हैं।

जिस प्रकार समस्त लोक में शिवजी वंदनीय एवं पूजनीय हैं उसी प्रकार रुद्राक्ष को धारण करने वाला व्यक्ति संसार में वंदन योग्य हैं।

रुद्राक्ष धारण फलम्

रुद्राक्षा यस्य गोत्रेषु ललाटे च त्रिपुण्ड्रकम्।
स चाण्डालोऽपि सम्म्पूज्यः सर्ववर्णोत्तमो भवेत्॥

अर्थातः जिसके शरीर पर रुद्राक्ष हो और ललाट पर त्रिपुण्ड हो, वह चाण्डाल भी हो तो सब वर्णों में उत्तम पूजनीय हैं।

अभक्त हो या भक्त हो, नींच से नीच व्यक्ति भी यदी रुद्राक्ष को धारण करता हैं, तो वह समस्त पातको के मुक्त हो जाता हैं।

जो मनुष्य नियमानुशार सहस्त्ररुद्राक्ष धारण करता हैं उसे देवगण भी वंदन करते हैं।

उच्छिष्टो वा विकर्मो वा मुक्तो वा सर्वपातकैः।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो रुद्राक्षस्पर्शनेन वै॥

अर्थातः जो मनुष्य उच्छिष्ट अथवा अपवित्र रहते हैं या बुरे कर्म करने वाल व अनेक प्रकार के पापों से युक्त वह मनुष्य रुद्राक्ष का स्पर्श करते ही समस्त पापों से छूट जाते हैं।

कण्ठे रुद्राक्षमादाय म्रियते यदि वा खरः।
सोऽपिरुद्रत्वमाप्नोति किं पुनर्भुवि मानवः।

अर्थातः कण्ठ में रुद्राक्ष को धारण कर यदि खर(गधा) भी मृत्यु को प्राप्त हो जाए तो वह भी रुद्र तत्व को प्राप्त होता हैं, तो पृथ्वीलोक के जो मनुष्य हैं उनके बारे में तो कहना ही क्या! आर्थात् सर्व सांसारिक मनुष्यों को स्वर्ग-प्राप्ति व लोक परलोक सुधारने के लिए रुद्राक्ष अवश्य धारण करने योग्य हैं।

रुद्राक्षं मस्तके धृत्वा शिरः स्नानं करोति यः।
गंगास्नानंफलं तस्य जायते नात्र संशयः॥

अर्थातः रुद्राक्ष को मस्तक पर धारण करके जो मनुष्य सिर से स्नान करता हैं उसे गंगा स्नान के समान परम पवित्र स्नान का फल प्राप्त होता हैं तथा वह मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो जाता हैं इसमें संशय नहीं हैं।

>> क्रमशः अगले अंक में ...

***

वर्णमाला के अनुसार स्वप्न फल विचार

संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...



- स्वप्न में आइना देखना किसी मित्र से भेट या इच्छा पूर्ति का संकेत है।
- स्वप्न में आइना में अपना मुहं देखना स्त्री से कष्ट या नौकरी में परेशानी का संकेत है।
- स्वप्न में आसमान देखना पदोन्नति या उच्च पद की प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं को आसमान मे उड़ते देखना कार्य में सफलता मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं को आसमान मे देखना यात्रा में शुभ फल की प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं को आसमान से गिरते देखना आर्थिक नुक्शान होने का संकेत है।
- स्वप्न में आसमान पर चलते देखना बीमारी आने का संकेत है।
- स्वप्न में आसमान हाथ से छूते देखना मनोकामना पूर्ण होने का संकेत हैं।
- स्वप्न में स्वयं के आंसू देखना परिवार में किसी मांगलिक कार्य के संपन्न होने का संकेत है।
- स्वप्न में आग देखना अनैतिक कार्य से धन प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में आग जला कर भोजन बनाते देखना पदौन्नति और धन लाभ का संकेत है।
- स्वप्न में आग आग से कपडा जलते देखना नेत्र रोग एवं विभिन्न कष्ट मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में आवाज सुनते देखना शुभ समय के आगमन का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं को किसी बंधन से आजाद होते देखना सकल चिंताओ से मुक्ति का संकेत है।
- स्वप्न में आलू देखना स्वादिष्ट भोजन मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में आंवला देखना कार्य सिद्धि में या इच्छा पूर्ति में विघ्न का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं को आंवला खाते देखना मनोकामना पूर्ण होने का संकेत है।
- स्वप्न में आक के फूल या पत्ते देखना शारारिक कष्ट मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में आग की लपटें देखना परिवार में झगडा ख़तम होने और शान्ति बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं को आम खाते देखना संतान का सुख में वृद्धि एवं धन प्राप्ति के संकेत हैं।
- स्वप्न में किसी पुरुष का स्त्री को आलिंगन करते देखना काम सुख की प्राप्ति का संकेत हैं।
- स्वप्न में किसी स्त्री का पुरुष को आलिंगन करते देखना पति से बेवफाई का संकेत हैं।
- स्वप्न में किसी पुरुष का पुरुष को आलिंगन करते देखना किसी से शत्रुता बढ़ने का संकेत हैं।
- स्वप्न में किसी स्त्री का स्त्री को आलिंगन करते देखना किसी से धन प्राप्ति का संकेत हैं।
- स्वप्न में स्वयं को आत्महत्या करते या किसी को आत्महत्या करते देखना दिर्धायु की प्राप्ति का संकेत हैं।
- स्वप्न में स्वयं को आवारागर्दी करते देखना रोजगार प्राप्ति या धन प्राप्ति का संकेत हैं।
- स्वप्न में किसी स्त्री का आँचल देखना किसी प्रतियोगिता में विजय मिलने का संकेत हैं।
- स्वप्न में किसी स्त्री को आँचल आंसू पोछते देखना शुभ समय आने का संकेत हैं।

- स्वप्न में किसी स्त्री को आँचल में मुँह छिपाते देखना सामाजिक मान-सम्मान की प्राप्ति का संकेत हैं।
- स्वप्न में आरा चलते देखना किसी संकट से शीघ्र मुक्ति मिलने का संकेत हैं।
- स्वप्न में आरा रूका हुवा दिखे तो किसी अज्ञात संकट के आनेका पूर्व संकेत हैं।
- स्वप्न में आवेदन करते देखना दूरस्थ स्थानों की यात्रा से लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में आश्रम देखना व्यवसाय में हानि होने का संकेत है।
- स्वप्न में आइसक्रीम खाते देखना शीघ्र सुख और शांति मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में आंधी आते देखना संकटों से छुटकारा मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में आंधी से स्वयंको गिरते देखना सफलता प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में औषधी देखना गलत संगति में फंसने का संकेत हैं।



- स्वप्न में इमली खाते देखना स्त्री के लिए शुभ संकेत लेकिन पुरुष के लिए अशुभ संकेत है।
- स्वप्न में इष्ट प्रतिमा के चोरी देखना विभिन्न कष्ट एवं संकटो का संकेत है।
- स्वप्न में इनाम मिलते देखना अपमानित होने का संकेत है।
- स्वप्न में इत्र लगाते देखना मान-सम्मान की वृद्धि एवं शुभफलों की प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में इमारत देखना मान-सम्मान में वृद्धि एवं धन लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में ईंट देखना कष्ट मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में किसी इंजन को चलता देखना यात्रा पर जाने का एवं शत्रु से सतर्क रहने का संकेत हैं।
- स्वप्न में इन्द्रधनुष देखना धन हानि और संकटों की वृद्धि होने का संकेत हैं।



- स्वप्न में उजाड़ स्थान देखना दूरस्थ स्थान की यात्रा होने का संकेत हैं।
- स्वप्न में उस्तरा चलते देखना धन हानि या धन की चोरी का संकेत हैं।
- स्वप्न में उस्तरा चलते देखना यात्रा में धन लाभ मिलने का संकेत हैं।
- स्वप्न में उपवन देखना किसी बीमारी का संकेत हैं।
- स्वप्न में उदघाटन का दृष्य देखना अशुभ संकेत हैं।
- स्वप्न में किसी को उदास होते देखना शुभ समाचार की प्राप्ति का संकेत हैं।
- स्वप्न में उधारी की लेन-देन होते देखना धन लाभ का संकेत हैं।
- स्वप्न में स्वयं को उड़ते देखना किसी गंभीर दुर्घटना होने का संकेत हैं।
- स्वप्न में स्वयं को उछलते देखना किसी अशुभ समाचार मिलने का संकेत हैं।
- स्वप्न में उल्लू को देखना किसी संकट या दुख के आने का संकेत हैं।
- स्वप्न में उबासी लेते देखना दुःख प्राप्ति का संकेत हैं।
- स्वप्न में स्वयं को उल्टे कपडे पहने देखना किसी प्रियजन से अपमान होने का संकेत हैं।

❖ स्वप्न में उजाला होते देखना शीघ्र ही उत्तम सफलता मिलने का संकेत हैं।
❖ स्वप्न में उठते और गिरते देखना महत्वपूर्ण कार्य हेतु कडे संघर्ष का संकेत हैं।
❖ स्वप्न में उलझे बाल अथवा धागे देखना परेशानियों में वृद्धि होने का संकेत हैं।
❖ स्वप्न में स्वयं को किसी ऊंचाई वाले स्थान पर देखना अपनो से अपमानित होने का संकेत हैं।
❖ स्वप्न में ऊन या ऊनी वस्त्र देखना धन लाभ मिलने का संकेत हैं।
❖ स्वप्न में ऊंचा पहाड़ देखना किसी महत्वपूर्ण कार्य के लिए कठिन परिश्रम से सफलता मिलने का संकेत हैं।
❖ स्वप्न में ऊंचे वृक्ष देखना इच्छा पूर्ति में विलंब का संकेत हैं।

>> क्रमश: अगले अंक में ...

अंक ज्योतिष का रहस्य

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...

मूलांक 2 स्वामी चन्द्रमा

मूलांक 2

स्वामी ग्रह:- चन्द्रमा

मित्र अंक:- 1,3,5, 9

शत्रु अंक:- -

सम:-6,8-

स्व अंक:-2

तत्व:- जल

यदि किसी व्यक्ति का जन्म किसी भी मास की 2,11,20 व 29 तारीख को हुवा हैं तो उनका मूलांक 2 होता है।

मूलांक 2 अंक के व्यक्ति अधिक कल्पनाशील और चंचल विचार धारा वाले होते हैं। व्यक्ति की प्रकृति कार्य क्षेत्र में अधिक कलात्मक एवं कलाप्रिय होती हैं।



व्यक्ति की शारीरिक बनावट मध्यम बलशाली होते हुवे भी उनकी मानसिक शक्ति प्रबल होती हैं। मूलांक 2 वाले व्यक्ति का दिमाग कार्य क्षेत्र में अन्य के मुकाबले अधिक तेज एवं बुद्धिमान होते हैं।

2 मूलांक वालों के लिए रविवार सोमवार, मंगलवार एवं गुरूवार का दिन भी शुभसूचक होगा।

मूलांक 2 का स्वामी ग्रह चन्द्रमा हैं, इस लिए मूलांक 2 में जन्म लेने वाले व्यक्ति के उपर चन्द्रमा का विशेष प्रभाव देखने को मिलता हैं, क्योकि 2 मूलांक में जन्म लेने के कारण व्यक्ति के भितर चन्द्र ग्रह की अनुकूलता के कारण चन्द्र ग्रह के गुणों का समावेश अन्य ग्रहों की अपेक्षा अधिक मात्रा में हो जाता हैं। चन्द्र ग्रह के इस विशेष प्रभावि गुणों के कारण ही व्यक्ति अधिक कल्पनाशील, भावुक, स्नेहशील, सहृदय एवं सरलचित्त होते हैं। व्यक्त्ति अधिक समय नई-नई कल्पनाओं की दुनिया में रमें रहते हैं। एसे व्यक्ति न तो अधिक समय तक किसी एक कार्य पर स्थिर रहते हैं और न ही लम्बे समय तक किसी विषय पर सोच सकते हैं। इनके मन-मस्तिष्क में नित्य नये-नये विचार सूझते रहते हैं और उन विचारों को क्रियाशील करने के लिए ये जूझते हुए दिखाई देते हैं। जिस प्रकार चन्द्रमां स्थिर नहीं रहता अर्थात घटता-बढ़ता दिखाई देता हैं इसी प्रकार मूलांक 2 में जन्म लेने वाले लोगों के महत्वपूर्ण निर्णय या योजनाएं स्थिर नहीं रहती इस कारण उनके अधिकतर कार्य या योजनाए पूर्ण होने से पहले ही कोई नई योजना या कार्य करने हेतु प्रस्तुत हो जाते हैं। मूलांक 2 में जन्म लेने वाले व्यक्ति की प्रायः कल्पनाएं उच्च कोटि की रहती है। व्यक्ति की बुद्धि एवं कुशलता से वह महत्वपूर्ण कार्यों में दूसरों के मुकाबले आगे निकल जाते हैं।

मूलांक 2 में जन्म लेने वाले व्यक्ति अधिर स्वभाव के होते हैं, व्यक्ति किसी कार्य को करते समय जल्दी जल्द घबरा जाते हैं, एसे में कई बार इनके भितर कार्य को पूर्ण करने की विलक्षण शक्तियां छुपी होने के बावजुद यह लोग आत्म विश्वास एवं धिरज की कमी के कारण कार्य को अधूरा छोड़ देते हैं।

व्यक्ति अपनी कार्य कुशलता से शीघ्र ही समाज में एक सम्मानिय एवं लोकप्रिय व्यक्ति बन सकते हैं। व्यक्ति में आत्म विश्वास की कमी होने के फलस्वरूप ये तुरंत निर्णय नहीं ले पाते। जीवन भर व्यक्ति के सामने चाहे छोटी से छोटी या बड़ी से बड़ी समस्या हो, ये उसमें उलझे ही रहते हैं।

मूलांक 2 में जन्म लेने वाले व्यक्ति स्वाभाव से थोडे शंकाशील होते हैं। व्यक्ति अपने प्रियजनों एवं आत्मियों के अनेक बार शक की नज़रों से देखता हैं, जिस कारण उसे स्वजनों से विरोध सहना पड़ता हैं। व्यक्ति हमेशा दूसरों का पूरा ध्यान रखते हैं। व्यक्ति अपने प्रियजनो एवं बंधुओं की भलाई के लिए प्रयास रत रहता हैं। व्यक्ति सहायता हेतु तत्पर होते हैं व्यक्ति किसी को मना नहीं कर सकते।

मूलांक 2 वाले व्यक्ति दूसरों के मन की बात जान लेने में निपुण होते हैं। मूलांक 2 वाले व्यक्ति प्रकृति से शिष्ट, उदार, शांतचित्त, कल्पनाशील, कलाप्रेमी, मृदुभाषी एवं थोड़े व्याकुल स्वभाव के होते हैं। अधिकतर मूलांक 2 वाले व्यक्ति में स्त्रीगुणों की प्रधानता होती है।

मूलांक 2 वालों के लिए किसी भी कार्य में हमेशा शान्त रहना एवं एकाग्रता से कार्य का संपादन करना अनुकूल रहेगा। क्योकी व्यक्ति के बार-बार निर्णय बदलने वाले स्वभाव के कारण उसे शीघ्र सफलता नहीं मिलती हैं।

व्यक्ति में आत्मविश्वास की कमी होने के कारण व्यक्ति थोड़े से परिश्रम से या कार्य में बिलम्ब होने से निराश एवं हताश हो जाते हैं। इस लिए यदि व्यक्ति अपनी बार-बार निर्णय बदलने वाली मानसिकता या आदत पर नियंत्रण कर ले तो उसे किसी भी कार्य में निश्चित रूप से सफल मिल सकती हैं।

मूलांक 2 वाले व्यक्ति की खास बात होती हैं की यह लोग जीवन में किसी मुसीबत तथा कठिन परिस्थितियों में भी मुस्कराते रहते हैं। व्यक्ति किसी भी बाधा, संकट या परेशानी से सबक लेकर उससे द्दढ़ संकल्प, जोश और लगन से अवश्य पूर्ण करने का भी सामर्थ्य रखता हैं। मूलांक 2 वाले व्यक्ति को पुरानी वस्तु से अधिक लगाव होता हैं।

व्यक्ति समाज में अपना मान-प्रतिष्ठा बनाये रखने का निरंतर प्रयास करते हैं। व्यक्ति को धन प्राप्त करने और संग्रह करने की इच्छा भी प्रबल होती हैं।

व्यक्ति के चंचल स्वभाव अके कारण उसके स्वजन अनेक बार उसकी भावनाओं की कदर नहीं करते जिस कारण व्यक्ति अधिक उदास और निराश दिखायी देता हैं। मूलांक 2 वाले व्यक्ति प्रेम संबंधित मामलों में भी अधिक कल्पनाशील होते हैं इस लिए व्यक्ति स्वजनों का विरोध करके या सहन करके पर स्त्री-पुरुष से संबंध बनाने से पीछे नहीं रहते। व्यक्ति अनैतिक संपर्क के पीछे अपना सब कुछ लुटाने से नहीं हिचकिचाते। व्यक्ति को परिजनो से भावनात्मक सहयोग नहीं मिलने के कारण वह सरलता से पर स्त्री-पुरुष के चुंगल में फस जाते हैं और धीरे-धीरे उनका मन और अधिक बैचेन और अशांत होता जाता हैं। व्यक्ति के बंधु-बांधव एवं मित्रों का दायरा अधिक बड़ा होता हैं।

शुभ दिन:

शुभ वर्ष 20,29,38,47,56,65,74 वां वर्ष हैं, तिथि 2,11,20,29 शुभ दायक होती हैं, किसी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिये इन्हीं तिथि का प्रयोग करना चाहिये, इन तिथियों में सोमवार का दिन पड़े तो बहुत शुभ होता हैं।

स्वास्थ्य:

व्यक्ति को तीव्र ज्वर, हृदय रोग, आँख का दुखना, चर्म रोग, चोट, कोढ़, मस्तिश्क संबंधि परेषानि, अपच, गठिआ, स्नायुविकार, आंतों के रोग तथा घुटने आदि की षिकायते होती हैं। जिन व्यक्तियों का मूलांक-1 हैं वे किसी ना किसी रूप में पेटकी बिमारी से पीड़ित होते हैं। दिल की धड़कने और रक्त प्रवाह अनियमित हो

जाता हैं। आँख का दुखना एवं दृश्टि दोष जैसे रोग होते हैं। उचित हैं आप समय-समय पर आँखों का परिक्षण करवाते रहें।

उपयुक्त आहार:

किशमिश, सौंफ, केसर, लौंग, जायफल, संतरे, नींबू, मोसंबी, खजूर, अदरक, जौ, पालक, गाजर आदि उपयोगी हैं। हृदय रोग के नमक कम खना चाहिये।

अनुकूल व्यवसाय:

व्यक्ति दलाली, होटल, तरल या रसदार पदार्थ, जल यात्रा, तैराकी, कागज, दवाई, श्रम कार्य, संगीत, चीनी, चिकित्सा, पत्रकारिता, नृत्य, लेखन, भूमि, अन्न, पानी, चांदी, डेरी, कृशि, भूर्गभ कार्य, पषुपालन, ट्रावेल, ट्रांसपोर्ट, रत्न, विभिन्न कला, आर्किटेक्चर आदि संबंधित कार्यो में अधिक सफल होते हैं।

शुभ दिशा:

मूलांक 2 वाले व्यक्ति के लिए उत्तर, उत्तरपूर्व एवं पश्चिम दिशाएँ शुभ सूचक हैं। श्वेत, अंगूरी, हरा एवं क्रीम रंग अनुकूल एवं भाग्यवर्धक हैं। नीला, लाल, काला रंग प्रतिकूल फलदायी हैं।

मूलांक 2 के व्यक्ति के लिए कष्ट निवारक उपाय

- आपका **मूलांक** स्वामी ग्रह चंद्र के शुभ प्रभावो की वृद्धि हेतु आप अपनी कनिष्ठिका उंगली में मोति, चंद्रकांत मणि धारण कर सकते हैं।
- अपने पूजा स्थान में प्राण-प्रतिष्ठित स्फटिक शिवलिंग, चंद्र यंत्र को स्थापित कर सकते हैं।
- यदि आर्थिक समस्या हो तो प्राण-प्रतिष्ठित श्रीयंत्र का नियमित पूजन करना लाभप्रद रहेगा।

ग्रह शांति के लिए व्रत उपवास:

सोमवार का व्रत: चंद्र ग्रह को प्रसन्न करने हेतु सोमवार का व्रत किया जाता हैं। जिस्से व्यक्तिने फेफडे के रोग, दमा, मानसिक रोग से मुक्ति मलती हैं। व्यक्तिनी चंलता दूर होती हैं, नशे कि लत छुडाने हेतु लाभ प्राप्त होता हैं, स्त्रीओं में मासिक रक्त-स्त्राव कि पीडा कम होती हैं। सोमवार का व्रत शिव को प्रिय हैं इस लिये अविवाहित लडकीयो कें 16 सोमवार का व्रत करने से उत्तम वर कि प्राप्ति होती हैं। सोमवार का व्रत करने से चंद्र के प्रभाव में आने वाले सभी व्यवसाय एवं वस्तुओ से लाभ प्राप्त होता हैं।

ग्रह शांति के लिए उपयुक्त रुद्राक्ष:

आपका **मूलांक** स्वामी चंद्र हैं अतः चंद्र ग्रह के अशुभ प्रभाव को दूर करने और शुभफलों की प्राप्ति के लिए 3 नंग या 5 नंग 2 मुखी रुद्राक्ष धारण करना आपके लिए उपयुक्त रहेगा। आप 2 मुखी रुद्राक्ष के साथ में 3 मुखी और 5 मुखी रुद्राक्ष भी धारण करने से आपको विशेष शुभ परिणामो की प्राप्ति होगी।

शांति के लिए दान

ग्रह:- चंद्र (वार:- सोमवार)

चंद्र ग्रह कि शांति हेतु मोती, चाँदी, चावल, चीनी, जल से भरा हुवा कलश, सफेद कपड़ा, दही, शंख, सफेद फूल, साँड आदि का दान करने से शुभ फल कि प्राप्ति होती हैं

ग्रह शांति के अन्य सरल उपाय:

- अनावश्यक किसी से वाद-विवाद से बचने हेतु लाल चंदन शिव मंदिर में दान करें।
- धन संचय हेतु किसी देवी मंदिर में गुप्त दान करें और अपनी मां की सेवा करें।
- कार्य सिद्धि हेतु नियमित पूजन के बाद चंदन का टीका लगाएं।
- स्वास्थ्य संबंधित समस्या दूर करने हेतु बडे-बुजुर्गों कि बात का आदर, सम्मान करें।
- किसी नये कार्य कि शुरुवात करने से पूरव पितरों को याद करें।
- धन की इच्छा हो तो घर में लाल फूल के पौधे लगाएं।

>> क्रमशः अगले अंक में ...

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900	कमल गट्टे की माला - Rs- 370
माया जाल- Rs- 251, 551, 751	हल्दी माला - Rs- 280
धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550)	तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460
घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751	नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above
हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370	नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730
लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190	हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910
नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145	मूंगे की माला Rs- 190, 280, Real -1050, 1900 & Above
स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250	पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above
सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910	वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460
रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550,	रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450
मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above	विधुत माला - Rs- 190, 280
कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above	मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online | Order Now

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है।

>> Shop Online | Order Now

गुरुत्व कार्यालय मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. 28.00 से Rs.100.00

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call Us: 91 + 9338213418, 91 + 9238328785,
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

सर्व कार्य सिद्धि कवच



जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

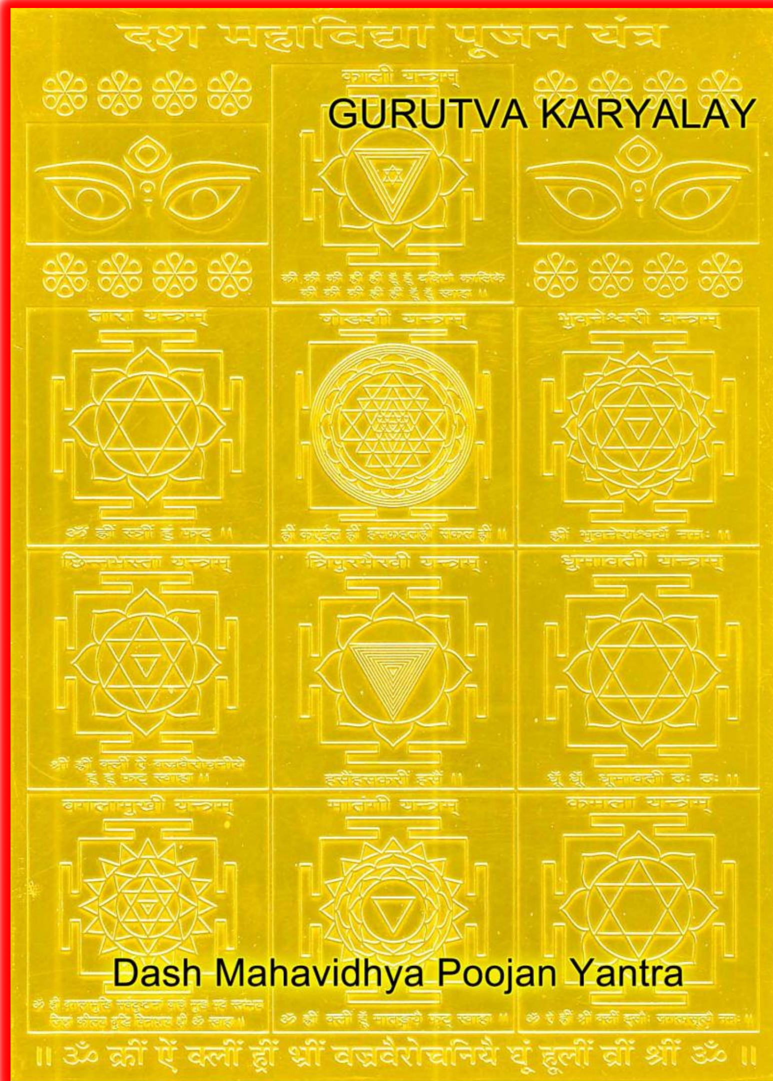
कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्रेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

दस महाविद्या पूजन यंत्र



दस महाविद्या पूजन यंत्र को देवी दस महाविद्या की शक्तियों से युक्त अत्यंत प्रभावशाली और दुर्लभ यंत्र माना गया हैं।

इस यंत्र के माध्यम से साधक के परिवार पर दसो महाविद्याओं का आशिर्वाद प्राप्त होता हैं। दस महाविद्या यंत्र के नियमित पूजन-दर्शन से मनुष्य की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती हैं। दस महाविद्या यंत्र साधक की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। दस महाविद्या यंत्र मनुष्य को शक्तिसंपन्न एवं भूमिवान बनाने में समर्थ हैं।

दस महाविद्या यंत्र के श्रद्धापूर्वक पूजन से शीघ्र देवी कृपा प्राप्त होती हैं और साधक को दस महाविद्या देवीयों की कृपा से संसार की समस्त सिद्धियों की प्राप्ति संभव हैं। देवी दस महाविद्या की कृपा से साधक को धर्म, अर्थ, काम व् मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति हो सकती हैं। दस महाविद्या यंत्र में माँ दुर्गा के दस अवतारों का आशीर्वाद समाहित हैं, इस लिए दस महाविद्या यंत्र को के पूजन एवं दर्शन मात्र से व्यक्ति अपने जीवन को निरंतर अधिक से अधिक सार्थक एवं सफल बनाने में समर्थ हो सकता हैं।

देवी के आशिर्वाद से व्यक्ति को ज्ञान, सुख, धन-संपदा, ऐश्वर्य, रूप-सौंदर्य की प्राप्ति संभव हैं। व्यक्ति को वाद-विवाद में शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होती हैं।

दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका। इस सभी देवी स्वरुपों को, सम्मिलित रुप में दश महाविद्या के नाम से जाना जाता हैं।

>> Shop Online

मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमा

पारद श्री यंत्र	पारद लक्ष्मी गणेश	पारद लक्ष्मी नारायण	पारद लक्ष्मी नारायण
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	100 Gram	121 Gram	100 Gram
पारद शिवलिंग	पारद शिवलिंग+नंदि	पारद शिवजी	पारद काली
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	101 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	75 Gram	37 Gram
पारद दुर्गा	पारद दुर्गा	पारद सरस्वती	पारद सरस्वती
82 Gram	100 Gram	50 Gram	225 Gram
पारद हनुमान 2	पारद हनुमान 3	पारद हनुमान 1	पारद कुबेर
100 Gram	125 Gram	100 Gram	100 Gram

हमारें यहां सभी प्रकार की मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमाएं, शिवलिंग, पिरामिड, माला एवं गुटिका शुद्ध पारद में उपलब्ध हैं।

बिना मंत्र सिद्ध की हुई पारद प्रतिमाएं थोक व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं।

ज्योतिष, रत्न व्यवसाय, पूजा-पाठ इत्यादि क्षेत्र से जुडे बंधु/बहन के लिये हमारें विशेष यंत्र, कवच, रत्न, रुद्राक्ष व अन्य दुलभ सामग्रीयों पर विशेष सुबिधाएं उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com

हमारे विशेष यंत्र

व्यापार वृद्धि यंत्र: हमारे अनुभवों के अनुसार यह यंत्र व्यापार वृद्धि एवं परिवार में सुख समृद्धि हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

भूमिलाभ यंत्र: भूमि, भवन, खेती से संबंधित व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए भूमिलाभ यंत्र विशेष लाभकारी सिद्ध हुवा हैं।

तंत्र रक्षा यंत्र: किसी शत्रु द्वारा किये गये मंत्र-तंत्र आदि के प्रभाव को दूर करने एवं भूत, प्रेत नज़र आदि बुरी शक्तियों से रक्षा हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र: अपने नाम के अनुसार ही मनुष्य को आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु फलप्रद हैं इस यंत्र के पूजन से साधक को अप्रत्याशित धन लाभ प्राप्त होता हैं। चाहे वह धन लाभ व्यवसाय से हो, नौकरी से हो, धन-संपत्ति इत्यादि किसी भी माध्यम से यह लाभ प्राप्त हो सकता हैं। हमारे वर्षों के अनुसंधान एवं अनुभवों से हमने आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से शेयर ट्रेडिंग, सोने-चांदी के व्यापार इत्यादि संबंधित क्षेत्र से जुडे लोगो को विशेष रुप से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होते देखा हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से विभिन्न स्रोत से धनलाभ भी मिल सकता हैं।

पदौन्नति यंत्र: पदौन्नति यंत्र नौकरी पैसा लोगो के लिए लाभप्रद हैं। जिन लोगों को अत्याधिक परिश्रम एवं श्रेष्ठ कार्य करने पर भी नौकरी में उन्नति अर्थात प्रमोशन नहीं मिल रहा हो उनके लिए यह विशेष लाभप्रद हो सकता हैं।

रत्नेश्वरी यंत्र: रत्नेश्वरी यंत्र हीरे-जवाहरात, रत्न पत्थर, सोना-चांदी, ज्वैलरी से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए अधिक प्रभावी हैं। शेर बाजार में सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं में निवेश करने वाले लोगों के लिए भी विशेष लाभदाय हैं।

भूमि प्राप्ति यंत्र: जो लोग खेती, व्यवसाय या निवास स्थान हेतु उत्तम भूमि आदि प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उस कार्य में कोई ना कोई अड़चन या बाधा-विघ्न आते रहते हो जिस कारण कार्य पूर्ण नहीं हो रहा हो, तो उनके लिए भूमि प्राप्ति यंत्र उत्तम फलप्रद हो सकता हैं।

गृह प्राप्ति यंत्र: जो लोग स्वयं का घर, दुकान, ओफिस, फैक्टरी आदि के लिए भवन प्राप्त करना चाहते हैं। यथार्थ प्रयासो के उपरांत भी उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पारही हो उनके लिए गृह प्राप्ति यंत्र विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं।

कैलास धन रक्षा यंत्र: कैलास धन रक्षा यंत्र धन वृद्धि एवं सुख समृद्धि हेतु विशेष फलदाय हैं।

आर्थिक लाभ एवं सुख समृद्धि हेतु 19 दुर्लभ लक्ष्मी यंत्र >> Shop Online | Order Now

विभिन्न लक्ष्मी यंत्र

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र	श्री श्री यंत्र (ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र	अंकात्मक बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी बीसा यंत्र	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	लक्ष्मी गणेश यंत्र	धनदा यंत्र > Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY :Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका

इस मुद्रिका में मूंगे को शुभ मुहूर्त में त्रिधातु (सुवर्ण+रजत+तांबें) में जड़वा कर उसे शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सर्वसिद्धिदायक बनाने हेतु प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त किया जाता हैं। इस मुद्रिका को किसी भी वर्ग के व्यक्ति हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर सकते हैं। यहं मुद्रिका कभी किसी भी स्थिती में अपवित्र नहीं होती। इस लिए कभी मुद्रिका को उतारने की आवश्यक्ता नहीं हैं। इसे धारण करने से व्यक्ति की समस्याओं का समाधान होने लगता हैं। धारणकर्ता को जीवन में सफलता प्राप्ति एवं उन्नति के नये मार्ग प्रसस्त होते रहते हैं और जीवन में सभी प्रकार की सिद्धियां भी शीध्र प्राप्त होती हैं। **मूल्य मात्र- 6400/-**

>> Shop Online | Order Now

(**नोट:** इस मुद्रिका को धारण करने से मंगल ग्रह का कोई बुरा प्रभाव साधक पर नहीं होता हैं।)

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका के विषय में अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख-सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातो में पति-पत्नी के बिच मे कलह होता रहता हैं, तो घर के जितने सदस्य हो उन सबके नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में बिना किसी पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मंत्र सिद्ध पति वशीकरण या पत्नी वशीकरण एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क आप कर सकते हैं।

100 से अधिक जैन यंत्र

हमारे यहां जैन धर्म के सभी प्रमुख, दुर्लभ एवं शीघ्र प्रभावशाली यंत्र ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के यंत्र कोपर ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। इसके अलावा आपकी आवश्यकता अनुसार आपके द्वारा प्राप्त (चित्र, यंत्र, ड़िज़ाईन) के अनुरुप यंत्र भी बनवाए जाते है. गुरुत्व कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराये गये सभी यंत्र अखंडित एवं 22 गेज शुद्ध कोपर(ताम्र पत्र)- 99.99 टच शुद्ध सिलवर (चांदी) एवं 22 केरेट गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। यंत्र के विषय मे अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

द्वादश महा यंत्र

यंत्र को अति प्राचिन एवं दुर्लभ यंत्रो के संकलन से हमारे वर्षो के अनुसंधान द्वारा बनाया गया हैं।

- ❖ परम दुर्लभ वशीकरण यंत्र,
- ❖ भाग्योदय यंत्र
- ❖ मनोवांछित कार्य सिद्धि यंत्र
- ❖ राज्य बाधा निवृत्ति यंत्र
- ❖ गृहस्थ सुख यंत्र
- ❖ शीघ्र विवाह संपन्न गौरी अनंग यंत्र
- ❖ सहस्त्राक्षी लक्ष्मी आबद्ध यंत्र
- ❖ आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र
- ❖ पूर्ण पौरुष प्राप्ति कामदेव यंत्र
- ❖ रोग निवृत्ति यंत्र
- ❖ साधना सिद्धि यंत्र
- ❖ शत्रु दमन यंत्र

उपरोक्त सभी यंत्रो को द्वादश महा यंत्र के रुप में शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध पूर्ण प्राणप्रतिष्ठित एवं चैतन्य युक्त किये जाते हैं। जिसे स्थापीत कर बिना किसी पूजा अर्चना-विधि विधान विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

>> Shop Online | Order Now

- ❖ क्या आपके बच्चे कुसंगती के शिकार हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे आपका कहना नहीं मान रहे हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे घर में अशांति पैदा कर रहे हैं?

घर परिवार में शांति एवं बच्चे को कुसंगती से छुडाने हेतु बच्चे के नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में स्थापित कर अल्प पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप तो आप मंत्र सिद्ध वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क इस कर सकते हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com |
www.gurutvakaryalay.blogspot.com

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र



शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारणकरने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं।

गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं। Rs: 4600, 5500, 6400 से 10,900 से अधिक

>> **Shop Online** | **Order Now**

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

92/3BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com

मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र: यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 325 से 12700 तक

श्री हनुमान यंत्र शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रह्मा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुसार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 910 से 12700 तक

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in, >> Shop Online | Order Now

विभिन्न देवताओं के यंत्र		
गणेश यंत्र	महामृत्युंजय यंत्र	राम रक्षा यंत्र राज
गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित)	महामृत्युंजय कवच यंत्र	राम यंत्र
गणेश सिद्ध यंत्र	महामृत्युंजय पूजन यंत्र	द्वादशाक्षर विष्णु मंत्र पूजन यंत्र
एकाक्षर गणपति यंत्र	महामृत्युंजय युक्त शिव खप्पर माहा शिव यंत्र	विष्णु बीसा यंत्र
हरिद्रा गणेश यंत्र	शिव पंचाक्षरी यंत्र	गरुड पूजन यंत्र
कुबेर यंत्र	शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र राज
श्री द्वादशाक्षरी रुद्र पूजन यंत्र	अद्विितीय सर्वकाम्य सिद्धि शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र
दत्तात्रय यंत्र	नृसिंह पूजन यंत्र	स्वर्णाकर्षणा भैरव यंत्र
दत्त यंत्र	पंचदेव यंत्र	हनुमान पूजन यंत्र
आपदुद्धारण बटुक भैरव यंत्र	संतान गोपाल यंत्र	हनुमान यंत्र
बटुक यंत्र	श्री कृष्ण अष्टाक्षरी मंत्र पूजन यंत्र	संकट मोचन यंत्र
व्यंकटेश यंत्र	कृष्ण बीसा यंत्र	वीर साधन पूजन यंत्र
कार्तवीर्यार्जुन पूजन यंत्र	सर्व काम प्रद भैरव यंत्र	दक्षिणामूर्ति ध्यानम् यंत्र
मनोकामना पूर्ति एवं कष्ट निवारण हेतु विशेष यंत्र		
व्यापार वृद्धि कारक यंत्र	अमृत तत्व संजीवनी काया कल्प यंत्र	त्रय तापोंसे मुक्ति दाता बीसा यंत्र
व्यापार वृद्धि यंत्र	विजयराज पंचदशी यंत्र	मधुमेह निवारक यंत्र
व्यापार वर्धक यंत्र	विद्यायश विभूति राज सम्मान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	ज्वर निवारण यंत्र
व्यापारोन्नति कारी सिद्ध यंत्र	सम्मान दायक यंत्र	रोग कष्ट दरिद्रता नाशक यंत्र
भाग्य वर्धक यंत्र	सुख शांति दायक यंत्र	रोग निवारक यंत्र
स्वस्तिक यंत्र	बाला यंत्र	तनाव मुक्त बीसा यंत्र
सर्व कार्य बीसा यंत्र	बाला रक्षा यंत्र	विद्युत मानस यंत्र
कार्य सिद्धि यंत्र	गर्भ स्तम्भन यंत्र	गृह कलह नाशक यंत्र
सुख समृद्धि यंत्र	संतान प्राप्ति यंत्र	कलेश हरण बत्तिसा यंत्र
सर्व रिद्धि सिद्धि प्रद यंत्र	प्रसूता भय नाशक यंत्र	वशीकरण यंत्र
सर्व सुख दायक पैंसठिया यंत्र	प्रसव-कष्टनाशक पंचदशी यंत्र	मोहिनि वशीकरण यंत्र
ऋद्धि सिद्धि दाता यंत्र	शांति गोपाल यंत्र	कर्ण पिशाचनी वशीकरण यंत्र
सर्व सिद्धि यंत्र	त्रिशूल बीशा यंत्र	वार्ताली स्तम्भन यंत्र
साबर सिद्धि यंत्र	पंचदशी यंत्र (बीसा यंत्र युक्त चारों प्रकारके)	वास्तु यंत्र
शाबरी यंत्र	बेकारी निवारण यंत्र	श्री मत्स्य यंत्र
सिद्धाश्रम यंत्र	षोडशी यंत्र	वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र
ज्योतिष तंत्र ज्ञान विज्ञान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	अडसठिया यंत्र	प्रेत-बाधा नाशक यंत्र
ब्रहमाण्ड साबर सिद्धि यंत्र	अस्सीया यंत्र	भूतादी व्याधिहरण यंत्र
कुण्डलिनी सिद्धि यंत्र	ऋद्धि कारक यंत्र	कष्ट निवारक सिद्धि बीसा यंत्र
क्रान्ति और श्रीवर्धक चौंतीसा यंत्र	मन वांछित कन्या प्राप्ति यंत्र	भय नाशक यंत्र
श्री क्षेम कल्याणी सिद्धि महा यंत्र	विवाहकर यंत्र	स्वप्न भय निवारक यंत्र

ज्ञान दाता महा यंत्र	लग्न विघ्न निवारक यंत्र	कुदृष्टि नाशक यंत्र
काया कल्प यंत्र	लग्न योग यंत्र	श्री शत्रु पराभव यंत्र
दीर्धायु अमृत तत्व संजीवनी यंत्र	दरिद्रता विनाशक यंत्र	शत्रु दमनार्णव पूजन यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र)	सरस्वती यंत्र
महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र)	सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित)
नव दुर्गा यंत्र	काली यंत्र
नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)	श्मशान काली पूजन यंत्र
नवार्ण बीसा यंत्र	दक्षिण काली पूजन यंत्र
चामुंडा बीसा यंत्र (नवग्रह युक्त)	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र
त्रिशूल बीसा यंत्र	खोडियार यंत्र
बगला मुखी यंत्र	खोडियार बीसा यंत्र
बगला मुखी पूजन यंत्र	अन्नपूर्णा पूजा यंत्र
राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र	एकांक्षी श्रीफल यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी गणेश यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
लक्ष्मी बीसा यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
अंकात्मक बीसा यंत्र	

ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस (Gold Plated)		ताम्र पत्र पर रजत पोलीस (Silver Plated)		ताम्र पत्र पर (Copper)	
साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1" X 1"	550	1" X 1"	370	1" X 1"	325
2" X 2"	910	2" X 2"	640	2" X 2"	550
3" X 3"	1450	3" X 3"	1050	3" X 3"	910
4" X 4"	2350	4" X 4"	1450	4" X 4"	1225
6" X 6"	3700	6" X 6"	2800	6" X 6"	2350
9" X 9"	9100	9" X 9"	4600	9" X 9"	4150
12" X12"	12700	12" X12"	9100	12" X12"	9100

यंत्र के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। **>> Shop Online | Order Now**

GURUTVA KARYALAY
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

28 अक्टूबर से 3 नवम्बर 2018 साप्ताहिक पंचांग

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	नक्षत्र	समाप्ति	योग	समाप्ति	करण	समाप्ति	चंद्र राशि	समाप्ति
28	रवि	कार्तिक	कृष्ण	चतुर्थी	16:42	रोहिणि	07:23	परिग्रह	22:50	बालव	16:42	वृषभ	18:52
29	सोम	कार्तिक	कृष्ण	पंचमी	14:50	आद्रा	29:5	शिव	20:11	तैतिल	14:50	मिथुन	-
30	मंगल	कार्तिक	कृष्ण	षष्ठी	12:53	पुनर्वसु	27:50	सिद्ध	17:27	वणिज	12:53	मिथुन	22:10
31	बुध	कार्तिक	कृष्ण	सप्तमी	10:54	पुष्य	26:33	साध्य	14:41	बव	10:54	कर्क	-
नवम्बर													
1	गुरु	कार्तिक	कृष्ण	अष्टमी	08:54	आश्लेषा	25:16	शुभ	11:54	कौलव	08:54	कर्क	-
2	शुक्र	कार्तिक	कृष्ण	नवमी-दशमी	06:54-28:56	मघा	23:58	शुक्ल	09:05	गर	06:54	कर्क	01:17
3	शनि	कार्तिक	कृष्ण	एकादशी	27:02	पूर्वाफाल्गुनी	22:43	इन्द्र	27:30	बव	15:58	सिंह	-

28 अक्टूबर से 3 नवम्बर 2018 साप्ताहिक व्रत-पर्व-त्यौहार

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	प्रमुख व्रत-त्योहार
28	रवि	कार्तिक	कृष्ण	चतुर्थी	16:42	-
29	सोम	कार्तिक	कृष्ण	पंचमी	14:50	-
30	मंगल	कार्तिक	कृष्ण	षष्ठी	12:53	स्कंद षष्ठी व्रत, अशोक चंदन षष्ठी
31	बुध	कार्तिक	कृष्ण	सप्तमी	10:54	अहोई अष्टमी व्रत (चन्द्रोदयव्यापिनी), कालाष्टमी व्रत, बहुलाष्टमी, दाम्पत्याष्टमी, राधाकुण्ड स्नान पर्व, कराष्टमी (महाराष्ट्र), राधाष्टमी
नवम्बर						
1	गुरु	कार्तिक	कृष्ण	अष्टमी	08:54	-
2	शुक्र	कार्तिक	कृष्ण	नवमी-दशमी	06:54-28:56	-
3	शनि	कार्तिक	कृष्ण	एकादशी	27:02	रमा एकादशी व्रत, रम्भा एकादशी व्रत

राशि रत्न

मेष राशि:	वृषभ राशि:	मिथुन राशि:	कर्क राशि:	सिंह राशि:	कन्या राशि:
मूंगा	हीरा	पन्ना	मोती	माणेक	पन्ना
Red Coral (Special)	Diamond (Special)	Green Emerald (Special)	Naturel Pearl (Special)	Ruby (Old Berma) (Special)	Green Emerald (Special)
5.25" Rs. 1050	10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 9100	5.25" Rs. 910	2.25" Rs. 12500	5.25" Rs. 9100
6.25" Rs. 1250	20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 12500	6.25" Rs. 1250	3.25" Rs. 15500	6.25" Rs. 12500
7.25" Rs. 1450	30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 14500	7.25" Rs. 1450	4.25" Rs. 28000	7.25" Rs. 14500
8.25" Rs. 1800	40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 19000	8.25" Rs. 1900	5.25" Rs. 46000	8.25" Rs. 19000
9.25" Rs. 2100	50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 23000	9.25" Rs. 2300	6.25" Rs. 82000	9.25" Rs. 23000
10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000	10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000
** All Weight In Rati	All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

तुला राशि:	वृश्चिक राशि:	धनु राशि:	मकर राशि:	कुंभ राशि:	मीन राशि:
हीरा	मूंगा	पुखराज	नीलम	नीलम	पुखराज
Diamond (Special)	Red Coral (Special)	Y.Sapphire (Special)	B.Sapphire (Special)	B.Sapphire (Special)	Y.Sapphire (Special)
10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 1050	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000
20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 1250	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000
30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 1450	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000
40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 1800	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000
50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 2100	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000
	10.25" Rs. 2800	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000
All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

* उपयोक्त वजन और मूल्य से अधिक और कम वजन और मूल्य के रत्न एवं उपरत्न भी हमारे यहा व्यापारी मूल्य पर उप्लब्ध हैं। >> Shop Online | Order Now

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता हैं जब उसके चारों और का माहोल उसके अनुरुप उसके वश में हों। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दुसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता हैं, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी और खीचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता हैं। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिव एवं दिवय चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के साथ व्यक्तिको दृढ़ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती हैं, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती हैं उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अद्भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्वितीय स्थान स्थापित करें।

श्रीकृष्ण बीसा कवच

श्रीकृष्ण बीसा कवच को केवल विशेष शुभ मुहुर्त में निर्माण किया जाता हैं। कवच को विद्वान कर्मकांडी ब्राहमणों द्वारा शुभ मुहुर्त में शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त करके निर्माण किया जाता हैं। जिस के फल स्वरुप धारण करता व्यक्ति को शीघ्र पूर्ण लाभ प्राप्त होता हैं। कवच को गले में धारण करने से वहं अत्यंत प्रभाव शाली होता हैं। गले में धारण करने से कवच हमेशा हृदय के पास रहता हैं जिस्से व्यक्ति पर उसका लाभ अति तीव्र एवं शीघ्र ज्ञात होने लगता हैं।

मूलय मात्र: 2350 >>Order Now

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र अलौकिक ब्रहमांडीय उर्जा का संचार करता हैं, जो एक प्राकृत्ति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम हैं!

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- विद्वानो के मतानुसार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती हैं।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी और आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता हैं।
- पति-पत्नी में आपसी प्रम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता हैं।

मूल्य:- Rs. 910 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध >> **Shop Online**

जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची

श्री चौबीस तीर्थंकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र	श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र
श्री चोबीस तीर्थंकर यंत्र	सर्वतो भद्र यंत्र
कल्पवृक्ष यंत्र	सर्व संपत्तिकर यंत्र
चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र	सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र)
चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र)	ऋषि मंडल यंत्र
चिंतामणी चक्र यंत्र	जगदवल्लभ कर यंत्र
श्री चक्रेश्वरी यंत्र	ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र	ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)	विषम विष निग्रह कर यंत्र
श्री पद्मावती यंत्र	क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र
श्री पद्मावती बीसा यंत्र	बृहच्चक्र यंत्र
श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र	वंध्या शब्दापह यंत्र
पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र	मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र
श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र	कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र	बालग्रह पीडा निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र	लधुदेव कुल यंत्र
भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक)	नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र
मणिभद्र यंत्र	उवसग्गहरं यंत्र
श्री यंत्र	श्री पंच मंगल महाश्रृत स्कंध यंत्र
श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र	ह्रींकार मय बीज मंत्र
श्री लक्ष्मीकर यंत्र	वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र
लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र	विद्या यंत्र
महाविजय यंत्र	सौभाग्यकर यंत्र
विजयराज यंत्र	डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र
विजय पतका यंत्र	भूतादि निग्रह कर यंत्र
विजय यंत्र	ज्वर निग्रह कर यंत्र
सिद्धचक्र महायंत्र	शाकिनी निग्रह कर यंत्र
दक्षिण मुखाय शंख यंत्र	आपत्ति निवारण यंत्र
दक्षिण मुखाय यंत्र	शत्रुमुख स्तंभन यंत्र

श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र

(अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)

घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापीत करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता हैं। जहरीले और हिंसक प्राणीं से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य, संतत्ति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती हैं। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यो पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गयें होतो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता हैं तो रक्षण होता हैं।

कुछ जानकारो के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुडे अद्‌भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया हैं और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता हैं तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही हैं, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा हैं। **मूल्य:- Rs. 2350 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध**

>> Shop Online | Order Now

28 अक्टूबर से 3 नवम्बर 2018 -विशेष योग

कार्य सिद्धि योग			
29 Oct	प्रातः 05:43 से प्रातः 06:18 तक		
त्रिपुष्कर योग (तीनगुना फल दायक)		**अमृत सिद्धि योग**	
30 Oct	दोपहर 01:08 से दिन प्रातः03:52 तक	29 oct	प्रात: 05:43 से प्रात: 06:18 तक
3 Nov	रात 03:14 से अगले दिन प्रात: 05:46 तक		
विघ्नकारक भद्रा			
30 Oct	दोपहर 01:08 से रात 12:09 तक (पृथ्वी)	2 Nov	सांय 06:10 से अगले दिन प्रात: 05:10 तक (पृथ्वी)

योग फल :

- कार्य सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- त्रिपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ तीन गुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- शास्त्रोंक्त मत से विघ्नकारक भद्रा योग में शुभ कार्य करना वर्जित हैं।

दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

	गुलिक काल (शुभ)	यम काल (अशुभ)	राहु काल (अशुभ)
वार	समय अवधि	समय अवधि	समय अवधि
रविवार	03:00 से 04:30	12:00 से 01:30	04:30 से 06:00
सोमवार	01:30 से 03:00	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00
मंगलवार	12:00 से 01:30	09:00 से 10:30	03:00 से 04:30
बुधवार	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00	12:00 से 01:30
गुरुवार	09:00 से 10:30	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00
शुक्रवार	07:30 से 09:00	03:00 से 04:30	10:30 से 12:00
शनिवार	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00	09:00 से 10:30

दिन के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
07:30 से 09:00	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
09:00 से 10:30	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
10:30 से 12:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
03:00 से 04:30	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
04:30 से 06:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30 से 09:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
09:00 से 10:30	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
10:30 से 12:00	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
03:00 से 04:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
04:30 से 06:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शास्त्रोक्त मत के अनुसार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघड़िया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

नोट: प्रायः दिन और रात्रि के चौघड़िये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघड़िये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ़ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघड़िये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

चौघडिये के स्वामी ग्रह

शुभ चौघडिया		मध्यम चौघडिया		अशुभ चौघड़िया	
चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह
शुभ	गुरु	चर	शुक्र	उद्वेग	सूर्य
अमृत	चंद्रमा			काल	शनि
लाभ	बुध			रोग	मंगल

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघड़िया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघड़िया उचित नहीं माना जाता।

दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक												
वार	1.घं	2.घं	3.घं	4.घं	5.घं	6.घं	7.घं	8.घं	9.घं	10.घं	11.घं	12.घं
रविवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
सोमवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
मंगलवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
बुधवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल
गुरुवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
शुक्रवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
शनिवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक												
रविवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
सोमवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
मंगलवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
बुधवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
गुरुवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
शुक्रवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
शनिवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता हैं, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

विद्वानो के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

- ❖ सूर्य कि होरा सरकारी कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- ❖ चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- ❖ मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- ❖ बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- ❖ गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- ❖ शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- ❖ शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।

सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं। उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्य होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसी स्थिती में लाभ प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वेर औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र का उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये **यंत्र मंत्र एवं तंत्र** के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

ज्योतिष विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जेसे हर व्यक्ति को ब्रहमांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रहमांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।

कवच के लाभ :

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उतपन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमे अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शरम अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जेसे-जेसे आयु बढती हैं वैसे-वसै उसके शरीर कि ऊर्जा कम होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमे जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमे होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

नोट:- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

Declaration Notice

- We do not accept liability for any out of date or incorrect information.
- We will not be liable for your any indirect consequential loss, loss of profit,
- If you will cancel your order for any article we can not any amount will be refunded or Exchange.
- We are keepers of secrets. We honour our clients' rights to privacy and will release no information about our any other clients' transactions with us.
- Our ability lies in having learned to read the subtle spiritual energy, Yantra, mantra and promptings of the natural and spiritual world.
- Our skill lies in communicating clearly and honestly with each client.
- Our all kawach, yantra and any other article are prepared on the Principle of Positiv energy, our Article dose not produce any bad energy.

Our Goal

- Here Our goal has The classical Method-Legislation with Proved by specific with fiery chants prestigious full consciousness (Puarn Praan Pratisthit) Give miraculous powers & Good effect All types of Yantra, Kavach, Rudraksh, precious and semi precious Gems stone deliver on your door step.

मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रो द्वारा शुभ महूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते है। अलग-अलग कवच तैयार करने केलिए अलग-अलग तरह के मंत्रो का प्रयोग किया जाता है।

❖ क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच? ❖ उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं ❖ कोई विशेष निति-नियम नहीं ❖ कोई बुरा प्रभाव नहीं

मंत्र सिद्ध कवच सूचि

राज राजेश्वरी कवच Raj Rajeshwari Kawach …………………………………	11000	विष्णु बीसा कवच Vishnu Visha Kawach ………………………………...	2350
अमोघ महामृत्युंजय कवच Amogh Mahamrutyunjay Kawach ………………………	10900	रामभद्र बीसा कवच Ramabhadra Visha Kawach ………………………………	2350
दस महाविद्या कवच Dus Mahavidhya Kawach ……………………………….	7300	कुबेर बीसा कवच Kuber Visha Kawach ………………………………….	2350
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि प्रद कवच Shri Ghantakarn Mahavir Sarv Siddhi Prad Kawach..	6400	गरुड बीसा कवच Garud Visha Kawach …………………………………	2350
सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच Sakal Siddhi Prad Gayatri Kawach …………………...	6400	लक्ष्मी बीसा कवच Lakshmi Visha Kawach ……………………………….	2350
नवदुर्गा शक्ति कवच Navdurga Shakiti Kawach ………………………………	6400	सिंह बीसा कवच Sinha Visha Kawach ………………………………….	2350
रसायन सिद्धि कवच Rasayan Siddhi Kawach ………………………………..	6400	नर्वाण बीसा कवच Narvan Visha Kawach ………………………………..	2350
पंचदेव शक्ति कवच Pancha Dev Shakti Kawach …………………………….	6400	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि कवच Sankat Mochinee Kalika Siddhi Kawach ……….……	2350
सर्व कार्य सिद्धि कवच Sarv Karya Siddhi Kawach ……………………………...	5500	राम रक्षा कवच Ram Raksha Kawach ………………………………….	2350
सुवर्ण लक्ष्मी कवच Suvarn Lakshmi Kawach ………………………………	4600	नारायण रक्षा कवच Narayan Raksha Kavach ………………………………...	2350
स्वर्णाकर्षण भैरव कवच Swarnakarshan Bhairav Kawach ………………………	4600	हनुमान रक्षा कवच Hanuman Raksha Kawach …………………………….	2350
कालसर्प शांति कवच Kalsharp Shanti Kawach ………………………………..	3700	भैरव रक्षा कवच Bhairav Raksha Kawach ………………………………	2350
विलक्षण सकल राज वशीकरण कवच Vilakshan Sakal Raj Vasikaran Kawach ……….……	3250	शनि साड़ेसाती और ढ़ैया कष्ट निवारण कवच Shani Sadesatee aur Dhaiya Kasht Nivaran Kawach …..	2350
इष्ट सिद्धि कवच Isht Siddhi Kawach ………………………………………	2800	श्रापित योग निवारण कवच Sharapit Yog Nivaran Kawach ………………………	1900
परदेश गमन और लाभ प्राप्ति कवच Pardesh Gaman Aur Labh Prapti Kawach …………....	2350	विष योग निवारण कवच Vish Yog Nivaran Kawach …………………………	1900
श्रीदुर्गा बीसा कवच Durga Visha Kawach …………………………………….	2350	सर्वजन वशीकरण कवच Sarvjan Vashikaran Kawach …………………………	1450
कृष्ण बीसा कवच Krushna Bisa Kawach ………………………………...	2350	सिद्धि विनायक कवच Siddhi Vinayak Ganapati Kawach …………………...	1450
अष्ट विनायक कवच Asht Vinayak Kawach ………………………………...	2350	सकल सम्मान प्राप्ति कवच Sakal Samman Praapti Kawach ………………………	1450
आकर्षण वृद्धि कवच Aakarshan Vruddhi Kawach …………………………	1450	स्वप्न भय निवारण कवच Swapna Bhay Nivaran Kawach ……………………..	1050

वशीकरण नाशक कवच Vasikaran Nashak Kawach …….…………………….	1450	सरस्वती कवच (कक्षा +10 के लिए) Saraswati Kawach (For Class +10) …………………..	1050
प्रीति नाशक कवच Preeti Nashak Kawach …….……………………….	1450	सरस्वती कवच (कक्षा 10 तकके लिए) Saraswati Kawach (For up to Class 10) ……………..	910
चंडाल योग निवारण कवच Chandal Yog Nivaran Kawach …….………………	1450	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
ग्रहण योग निवारण कवच Grahan Yog Nivaran Kawach …….………………..	1450	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ……………………………...	820
मांगलिक योग निवारण कवच (कुजा योग) Magalik Yog Nivaran Kawach (Kuja Yoga) …………	1450	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach ……………………………….	820
अष्ट लक्ष्मी कवच Asht Lakshmi Kawach …….………………………...	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	820
आकस्मिक धन प्राप्ति कवच Akashmik Dhan Prapti Kawach …….……………..	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach …….…………………..…...	910
स्पे.व्यापार वृद्धि कवच Special Vyapar Vruddhi Kawach …….…………….	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach …….…………….....……….	910
धन प्राप्ति कवच Dhan Prapti Kawach …….…………………………...	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach ……………………………….	910
कार्य सिद्धि कवच Karya Siddhi Kawach …….…………………………	1250	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
भूमिलाभ कवच Bhumilabh Kawach …….………………………………	1250	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ……………………………...	820
नवग्रह शांति कवच Navgrah Shanti Kawach …….………………………..	1250	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach ……………………………….	820
संतान प्राप्ति कवच Santan Prapti Kawach …….………………………….	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	820
कामदेव कवच Kamdev Kawach …….……………………………….	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach …….…………………..…...	910
हंस बीसा कवच Hans Visha Kawach …….…………………………….	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach …….…………….....……….	910
पदौन्नति कवच Padounnati Kawach …….…………………………..	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach ……………………………….	910
ऋण / कर्ज मुक्ति कवच Rin / Karaj Mukti Kawach …….……………………	1250	त्रिशूल बीसा कवच Trishool Visha Kawach …….…………………………...	910
शत्रु विजय कवच Shatru Vijay Kawach ………………………………...	1050	व्यापर वृद्धि कवच Vyapar Vruddhi Kawach ……………………………...	910
विवाह बाधा निवारण कवच Vivah Badha Nivaran Kawach ………………………...	1050	सर्व रोग निवारण कवच Sarv Rog Nivaran Kawach …………………………....	910
स्वस्तिक बीसा कवच Swastik Visha Kawach …….………………………	1050	शारीरिक शक्ति वर्धक कवच Sharirik Shakti Vardhak Kawach ..……………………...	910
मस्तिष्क पृष्टि वर्धक कवच Mastishk Prushti Vardhak Kawach ……………………	820	सिद्ध शुक्र कवच Siddha Shukra Kawach ……………………………….	820

वाणी पृष्टि वर्धक कवच Vani Prushti Vardhak Kawach …………………………	820	सिद्ध शनि कवच Siddha Shani Kawach ………………………………...	820
कामना पूर्ति कवच Kamana Poorti Kawach ………………………………	820	सिद्ध राहु कवच Siddha Rahu Kawach ……………………………………	820
विरोध नाशक कवच Virodh Nashan Kawach ………………………………	820	सिद्ध केतु कवच Siddha Ketu Kawach ……………………………………	820
सिद्ध सूर्य कवच Siddha Surya Kawach …………………………………	820	रोजगार वृद्धि कवच Rojgar Vruddhi Kawach ………………………………	730
सिद्ध चंद्र कवच Siddha Chandra Kawach ………………………………	820	विघ्न बाधा निवारण कवच Vighna Badha Nivaran Kawah …………………………	730
सिद्ध मंगल कवच (कुजा) Siddha Mangal Kawach (Kuja) ………………………	820	नज़र रक्षा कवच Najar Raksha Kawah ……………………………………	730
सिद्ध बुध कवच Siddha Bhudh Kawach …………………………………	820	रोजगार प्राप्ति कवच Rojagar Prapti Kawach …………………………………	730
सिद्ध गुरु कवच Siddha Guru Kawach ………………………………..…	820	दुर्भाग्य नाशक कवच Durbhagya Nashak ………………………………………	640





उपरोक्त कवच के अलावा अन्य समस्या विशेष के समाधान हेतु एवं उद्देश्य पूर्ति हेतु कवच का निर्माण किया जाता हैं। कवच के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। *कवच मात्र शुभ कार्य या उद्देश्य के लिये >> **Shop Online** | **Order Now**

GURUTVA KARYALAY

Call Us - 9338213418, 9238328785,
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and www.gurutvajyotish.com

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

Gemstone Price List

NAME OF GEM STONE		GENERAL	MEDIUM FINE	FINE	SUPER FINE	SPECIAL
Emerald	(पन्ना)	200.00	500.00	1200.00	1900.00	2800.00 & above
Yellow Sapphire	(पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Yellow Sapphire Bangkok	(बैंकोक पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Blue Sapphire	(नीलम)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
White Sapphire	(सफ़ेद पुखराज)	1000.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Bangkok Black Blue	**(बैंकोक नीलम)**	100.00	150.00	190.00	550.00	1000.00 & above
Ruby	(माणिक)	100.00	190.00	370.00	730.00	1900.00 & above
Ruby Berma	(बर्मा माणिक)	5500.00	6400.00	8200.00	10000.00	21000.00 & above
Speenal	(नरम माणिक/लालडी)	300.00	600.00	1200.00	2100.00	3200.00 & above
Pearl	(मोति)	30.00	60.00	90.00	120.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति तक)	(लाल मूंगा)	125.00	190.00	280.00	370.00	460.00 & above
Red Coral (4 रति से उपर)	(लाल मूंगा)	190.00	280.00	370.00	460.00	550.00 & above
White Coral	(सफ़ेद मूंगा)	73.00	100.00	190.00	280.00	460.00 & above
Cat's Eye	(लहसुनिया)	25.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Cat's Eye ODISHA	(उडिसा लहसुनिया)	280.00	460.00	730.00	1000.00	1900.00 & above
Gomed	(गोमेद)	19.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Gomed CLN	(सिलोनी गोमेद)	190.00	280.00	460.00	730.00	1000.00 & above
Zarakan	(जरकन)	550.00	730.00	820.00	1050.00	1250.00 & above
Aquamarine	(बेरुज)	210.00	320.00	410.00	550.00	730.00 & above
Lolite	(नीली)	50.00	120.00	230.00	390.00	500.00 & above
Turquoise	(फ़िरोजा)	100.00	145.00	190.00	280.00	460.00 & above
Golden Topaz	(सुनहला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Real Topaz	(उडिसा पुखराज/टोपज)	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
Blue Topaz	**(नीला टोपज)**	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
White Topaz	(सफ़ेद टोपज)	60.00	90.00	120.00	240.00	410.00& above
Amethyst	(कटेला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Opal	(उपल)	28.00	46.00	90.00	190.00	460.00 & above
Garnet	(गारनेट)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Tourmaline	(तुर्मलीन)	120.00	140.00	190.00	300.00	730.00 & above
Star Ruby	(सुर्यकान्त मणि)	45.00	75.00	90.00	120.00	190.00 & above
Black Star	(काला स्टार)	15.00	30.00	45.00	60.00	100.00 & above
Green Onyx	(ओनेक्स)	10.00	19.00	28.00	55.00	100.00 & above
Lapis	(लाजर्वत)	15.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Moon Stone	(चन्द्रकान्त मणि)	12.00	19.00	28.00	55.00	190.00 & above
Rock Crystal	(स्फ़टिक)	19.00	46.00	15.00	30.00	45.00 & above
Kidney Stone	(दाना फ़िरंगी)	09.00	11.00	15.00	19.00	21.00 & above
Tiger Eye	(टाइगर स्टोन)	03.00	05.00	10.00	15.00	21.00 & above
Jade	(मरगच)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Sun Stone	(सन सितारा)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above

Note : **Bangkok** (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, **Blue Topaz** not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

GURUTVA KARYALAY

	YANTRA LIST	EFFECTS
	Our Splecial Yantra	
1	12 – YANTRA SET	For all Family Troubles
2	VYAPAR VRUDDHI YANTRA	For Business Development
3	BHOOMI LABHA YANTRA	For Farming Benefits
4	TANTRA RAKSHA YANTRA	For Protection Evil Sprite
5	AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA	For Unexpected Wealth Benefits
6	PADOUNNATI YANTRA	For Getting Promotion
7	RATNE SHWARI YANTRA	For Benefits of Gems & Jewellery
8	BHUMI PRAPTI YANTRA	For Land Obtained
9	GRUH PRAPTI YANTRA	For Ready Made House
10	KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA	-
	Shastrokt Yantra	
11	AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA	Blessing of Durga
12	BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL)	Win over Enemies
13	BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL)	Blessing of Bagala Mukhi
14	BHAGYA VARDHAK YANTRA	For Good Luck
15	BHAY NASHAK YANTRA	For Fear Ending
16	CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta)	Blessing of Chamunda & Navgraha
17	CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA	Blessing of Chhinnamasta
18	DARIDRA VINASHAK YANTRA	For Poverty Ending
19	DHANDA POOJAN YANTRA	For Good Wealth
20	DHANDA YAKSHANI YANTRA	For Good Wealth
21	GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra)	Blessing of Lord Ganesh
22	GARBHA STAMBHAN YANTRA	For Pregnancy Protection
23	GAYATRI BISHA YANTRA	Blessing of Gayatri
24	HANUMAN YANTRA	Blessing of Lord Hanuman
25	JWAR NIVARAN YANTRA	For Fewer Ending
26	JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA	For Astrology & Spritual Knowlage
27	KALI YANTRA	Blessing of Kali
28	KALPVRUKSHA YANTRA	For Fullfill your all Ambition
29	KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA)	Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga
30	KANAK DHARA YANTRA	Blessing of Maha Lakshami
31	KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA	-
32	KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in work
33	• SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in all work
34	KRISHNA BISHA YANTRA	Blessing of Lord Krishna
35	KUBER YANTRA	Blessing of Kuber (Good wealth)
36	LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA	For Obstaele Of marriage
37	LAKSHAMI GANESH YANTRA	Blessing of Lakshami & Ganesh
38	MAHA MRUTYUNJAY YANTRA	For Good Health
39	MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA	Blessing of Shiva
40	MANGAL YANTRA (TRIKON 21 BEEJ MANTRA)	For Fullfill your all Ambition
41	MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA	For Marriage with choice able Girl
42	NAVDURGA YANTRA	Blessing of Durga

	YANTRA LIST	EFFECTS
43	NAVGRAHA SHANTI YANTRA	For good effect of 9 Planets
44	NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA	For good effect of 9 Planets
45	• SURYA YANTRA	Good effect of Sun
46	• CHANDRA YANTRA	Good effect of Moon
47	• MANGAL YANTRA	Good effect of Mars
48	• BUDHA YANTRA	Good effect of Mercury
49	• GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA)	Good effect of Jyupiter
50	• SUKRA YANTRA	Good effect of Venus
51	• SHANI YANTRA (COPER & STEEL)	Good effect of Saturn
52	• RAHU YANTRA	Good effect of Rahu
53	• KETU YANTRA	Good effect of Ketu
54	PITRU DOSH NIVARAN YANTRA	For Ancestor Fault Ending
55	PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA	For Pregnancy Pain Ending
56	RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA	For Benefits of State & Central Gov
57	RAM YANTRA	Blessing of Ram
58	RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA	Blessing of Riddhi-Siddhi
59	ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA	For Disease- Pain- Poverty Ending
60	SANKAT MOCHAN YANTRA	For Trouble Ending
61	SANTAN GOPAL YANTRA	Blessing Lorg Krishana For child acquisition
62	SANTAN PRAPTI YANTRA	For child acquisition
63	SARASWATI YANTRA	Blessing of Sawaswati (For Study & Education)
64	SHIV YANTRA	Blessing of Shiv
65	SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace
66	SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth
67	SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA	For Bad Dreams Ending
68	VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA	For Vehicle Accident Ending
69	VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes
70	VASTU YANTRA	For Bulding Defect Ending
71	VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA	For Education- Fame- state Award Winning
72	VISHNU BISHA YANTRA	Blessing of Lord Vishnu (Narayan)
73	VASI KARAN YANTRA	Attraction For office Purpose
74	• MOHINI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Female
75	• PATI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Husband
76	• PATNI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Wife
77	• VIVAH VASHI KARAN YANTRA	Attraction For Marriage Purpose

Yantra Available @:- Rs- 325 to 12700 and Above…..

>> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

सूचना

- ❖ पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ❖ लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारो से सहमत हों।
- ❖ नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ❖ पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं हैं।
- ❖ प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता हैं तो यह मात्र एक संयोग हैं।
- ❖ प्रकाशित सभी लेख भारतिय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ❖ अन्य लेखको द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ❖ ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ❖ पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ❖ हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं।
- ❖ यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ❖ हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- ❖ पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता हैं। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता हैं।
- ❖ अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष साप्ताहिक ई-पत्रिका

28 अक्टूबर से 3 नवम्बर 2018

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418, 91+9238328785

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvajyotish.com

www.shrigems.com

http://gk.yolasite.com/

www.gurutvakaryalay.blogspot.com

हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता हैं। वहां आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता हैं, भौतिकता का आवरण ओढे व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता हैं, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योकि भावनाए हि भवसागर हैं, जिसमे मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समजने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता हैं। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार हैं। ईसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ हैं। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेंशा प्रयोग करे जो १००% फलदायक हो। ईसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं हे की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।
जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com



GURUTVA JYOTISH

Weekly

27-Oct to 3-Nov 2018